

बन्दे मात्रम

तरानये भारत

प्रकाशक

नेशनल [जनरल]

बुक डिपो

नईमडका देहली ।

भारत का दूध पीकर भारत को शान रखना ।
हो भारती, कहाते कुछ इस का मान रखना ॥

वन्देमात्रम्

तरान-ये-भारत

भारत के राष्ट्रीय कवियों की
देशभक्ति पूर्ण तथा जोशीली
कविताओं का संग्रह ।

प्रकाशक

नेशनल [जनरल] बुक डिपो
नई सड़क देहली ॥

मास्टर लक्ष्मण के प्रबन्ध से
स्टार प्रेस देहली में मुद्रित ।

प्रथमवार २०००

मूल्य १-)

सूची-पत्र ।

गजल	पृष्ठ	गजल	पृष्ठ
मार्थना	१	स्वदेशी गीत	१५
सन्देशमात्रम्	२	अजबये दिल	१६
भारत का दूध पीकर भारत	३	इत्तफाक की बरकत	१६
ती शान रखना	३	नगमये इत्तहाद	१७
सद्गुरुहिन्द की है आंख का	४	परवाह न करो	१८
गारा गांधी	५	हिम्मत करो जवानो	२३
तन का राग	५	ऐ कौम बाग हिन्द को	२३
म होंगे पेश होगा	६	शहीदों की यादगार	२४
बाजार हस्ती	६	इसलिये तुम हिन्द में	२६
बुर्दाया कैवी मुसीबतों में	१२	इसलिये हम हिन्द में	२८
म क्या हैं	१३	अब अमेजो को किस	३०
आप अपनी गफलतोंका	१३	तरह रहना चाहिये	३०
देखा जायगा शुलशन में	१४	तक मवालात	३१
जिजां हमसे	१४	एक पोलिटिकल कैदी को	३३
		जज्वाल	३३
		ब्यू टी और राखी	३३

गजल	पृष्ठ	गजल	पृष्ठ
है मसीहाई का दावा	३४	दर्द दिले	३५४
खूब खर्चा महात्मा का चले	३५	प्रभो गरदिश में क्यों है	३५६
एक पोलिटिकल के दी का		नया शिवालय	३६
अपनी मां से खताब	३७	नया काबा	५८
तराना फलक	३८	रहेगा इस तरह पाबन्द	६०
शाहसे कहना हमारे हिंदू		अज्र हाल	६१
कस्ता हाल है	३६	गफलत की नींद छोड़ो	६१
मध्यस्तर देखिये होगी	३६	याद घतन	६५
लाख की एक यान	६०	शैबाये घतना	६७
आज	४१	फरियाद भारत	६६
हिन्दुस्तान कदाम	४२	दुनिया की कुलफती से	७०
मेरा घतन	४३	दिली उमंग	७१
सारे जहाँ का दिल	४५	एक कौमपरस्त की स्वादिश	७१
हिन्दुस्तान मेरा	४६	तरानये इत्तहाद	७२
घर था दिलावरों का	४७	फरियाद भारत	७३
एकसुहिम्बे हिन्दू को पैगाम	५०	क्या कर	७४
हिन्दुस्तानी धर्मों का गीत	५१	तराना इत्तहाद	७५
मिलेगी हाथ से तेरे	५२	शहीद कौम	७६
दुआ लेलो यही दिन है	५३	होमकली मज	७७
हालत कौम	५३		

राजल	पृष्ठ	राजल	पृष्ठ
१. हेच है सय नियामते	७८	तिलक	१६६
२. पोलिटिकल कौदियों के		अल्लाह ने चाहा	१६७
३. अजबत	७९	है नियासत की	१६९
४. तरानये मोहब्बत	८०	कलाम, जौहर	१७०
५. मेरी कसूर यह था	८२	महात्मा गांधी की बंसरी	१७२
६. कौमी इच्छाद	८२	स्वागत, लाला लाजपतराय	१७२
७. धाग जलियान वाला	८४	कारवाने सिद्क के	१७४
८. हम आँन न छोड़ेंगे	८५	योलती हुई मूर्ती	१७५
९. मुर्ख या कूँचा गली	८६	बेताज हिन्दू का है तू	
१०. हिन्दियों का मौजूदा फौद	८७	ताजदार गांधी	१७७
११. हम घतन हैं इसलिये	८८	हिन्दुस्तान की उस्मीद	
१२. नगमये, इच्छाद	८८	महात्मा गांधी	१७८
१३. नेकों की पहिचान	८९	तू मुहको कौम का	१७९
१४. दुआ कीजै कि ही	९०	चन्देमात्रम्	१८०
१५. गर स्वराज मिल जाय	९२	गीत भारत के	१८१
१६. पैगाम अरशद	९२	भारत माता से खताब	१८२
१७. मजहब और घतन	९३	भारत माता का लुधाव	१८३
१८. करनल वेज्जुड से इलतिजा	९३	सिधे रहेंगे	१८५
१९. स्वदेश वस्तु	९४	आजाद हिन्द	१८६
२०. क्यों ओ गधे	९६		
२१. आजाद होने का घक	९६		

वन्दे मांत्रम् ।
तरानये-भारत ।

प्रार्थना

या रथ रहें सलामत यह रहनुाम हमारे ।
आजादी के अर्थ के जो चमकते सितारे ।
भारत में दम है वाकी जिनके दमो कदम से
बिन नाखुदा लगायें इस नाय को किनारे ।
है मादरे घतन का सीने में धर्द तिन के ।
इस के लिये जिन्हो ने लाखों ही दुख सहारे ।
जो जेल को समझते हैं मन्दरो मसजिद ।
और अन्डेमन को काशी वो काबा के मीनारे ।
फांसी मिले तो सभर्से यह है हयात अवदी ।
बलिदान से कटेंगे भारत के कष्ट सारे ।
अहले घतन की छिदमत को समझा हज्ज अकबर ।
गंगा स्नान यह है दुख औरों के निवार ।
भारत के घास्ते है मरना वो जीना जिनका ।
सोजे घतन के उठते है जिगर में शरारे ।

भारत में इनका दम है यशवत सिंह गनीमत ।

जिन्दा रहें अबदतक यह कौम के प्यारे ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
वन्देमात्रम्

पे मादरे हिन्दूस्तां कहता हूँ वन्दे मात्रम् ।

खादिम हूँ तेरा बैंगुमा कहता हूँ वन्देमात्रम् ।

कहता हूँ वन्दे मात्रम् कहता हूँ वन्देमात्रम्

अल्लाह अकरर नारये तौहीद लब पर है मेरे ।

और तेरी अजमत का निशा कहता हूँ वन्देमात्रम् ।

कहता हूँ वन्देमात्रम् कहता हूँ वन्दे मात्रम् ।

हिन्दूकी जय मुसलिमकी जय सिक्खोंकी जयदायमरहे

भारत की जय भी हो अर्था कहता हूँ वन्दे मात्रम् ।

कहता हूँ वन्दे मात्रम् कहता हूँ वन्देमात्रम् ।

खदमत पे बांधी है कमर बेजा है सब रौफो सतर ।

जयि अगर जाती है जा कहता हूँ वन्देमात्रम् ।

कहता हूँ वन्देमात्रम् कहता हूँ वन्देमात्रम् ।

आफात की आंधी चले वारिश मसायब की रहे ।

विगडे जमीनो आस्मा कहता हूँ वन्देमात्रम् ।

कहता हूँ वन्देमात्रम् कहता हूँ वन्देमात्रम् ।

उठें बगूले फहर के और राद भी फडका करे ।

चलती रहेगी यह जबां कहता हूँ वन्देमात्रम् ।

खजर बरफ दुश्मन गो सर पे मेरे हों खडा ।

निकलेगा मेरे मुँह सेवां कहता हूँ वन्देमात्रम् ।

कहता हूँ वन्देमात्रम् कहता हूँ वन्देमात्रम् ।

हा तोर बम'हे। जेश हो परोप्लेन या गैस हो ।

फायर हो डायर का श्रया कहता हूँ वन्देमात्रम् ।

कहता हूँ वन्दे मात्रम् कहता वन्दे मात्रम् ।

सरकार गैजोगजब से जन्दा में मुझ को भेजटे ।

फिर भी रहे वदे जग कहता हूँ वन्देमात्रम् ।

कहता हूँ वन्दे मात्रम् कहता हूँ वन्दे मात्रम् ।

हाथों में होवे हथरुडी पावों में वेडा हा पडो ।

कलमा जवा पे हा रवा कहता हूँ वन्दे मात्रम् ।

कहता हूँ वन्दे मात्रम् कहता हूँ वन्दे मात्रम् ।

भारत का दूध पीकर भारत की शान रखना

भारत का दूध पीकर भारत की शान रखना ।

हो भारती कहाते कुछ इस का मान रखना ।

भारत सपूत धनकर मय्या का दुप मिटाओ ।

आपत्तिये जो आर्ये नीना सिपर वनाओ ।

हम क्या थे, क्या हुये ह, अब और क्या है होना?

सर्वस्य जो चुके हे, अब क्या रहा है खोना

ऊचे शिखर पर चढ़के कैसे गिरे ह नाचे ।

- कोई अपूर्व शक्ति हम को भले ही खीचे ।
 क्या बूढ़ा बैल भारत दल दल में फँस रहा है ।
 ऐसी गिरी दशा पर संसार हँस रहा है ।
 भालू वो शेर दोनों मुह फाड़ यां खड़े हैं ।
 भगवान अब उमारो तेरी शरण पड़े हैं ।
 कल फिरते थे जो नन्गे, हव्शी हमें बताते ।
 मूरख समझ के हमको क्या क्या हैं रंग लाते ।
 घुरकी हमें बताते धमकी हमें दिखाते ।
 कहते है, "बैल करो दुम जो कुछ है हम बताते" ।
 यह दुखी दशा हमारी अमे ने बनाई ।
 थोथे घमंड हीने जड अपनी ही कटाई ।
 काटे का नाम तक भी भारत न जानता था ।
 सेवा सभी की करना कर्तव्यमानता था ।
 सय की भलाई चाही सय का मरा सजाना ।
 आये हुधों को इसने अपने से बढ़के जाना ।
 इसकी शरण जो आया सर पर उसे चढ़ाया ।
 यह पोच हम को समझा इतना उसे चढ़ाया ।
 यातां में पालिसी को देखो कभी न जाना ।
 दिखलायें लाख लालच पर उस तरफ न जाना ।
 जब तक न दुख सहोगे हरगिज न सुख मिलेगा ।
 परिणाम दुखका सुख है दुख ही से सुख मिलेगा ।

आगे कदम जो रखना पीछे न फिर हटाना ।

ईश्वर सहाय होगा, हिम्मत न फिर हटाना ॥

मादरे हिन्द की है आंख का तारा गांधी

हम हैं गांधी के मिया और है हमारा गांधी ।

शान करतार का वेशक है नजारा गांधी ।

देवता फर्श पर कुदरत ने उतारा गांधी ।

जानो दिल से हमें क्यों न हो प्यारा गांधी ।

मादरे हिन्द की है आंख का तारा गांधी ॥

मालवी जे ब है गुलशन की तो नहरू जीनत ।

था तिलक चादे याहरी तो जफर है निगइत ।

मोतिया किचल अगर है तो गेदा भजदत ।

है मोहम्मद अली नरगिस तो गुलाब है शौकत ।

गुलशने हिन्द में है फूल हजार गांधी ॥

न तहय्या किया पहिले कमी हैरानी का ।

न क्याल आया तबीयत में परेशानी का ।

खर मशकूर हूँ मैं तेरी मेहरबानी का ।

अब तो कुछ गम नहीं इस बहरे की तुंगुयानीका ।

दुयतीनाव का है जब कि सहारा गांधी ॥

वतन का रोग

जमी हिन्द की रूखे में अर्श आता है ।

यह होम-रूल की उम्मीद का उजाला है ।

बड़े बड़ों ने ही इस 'आजू' को पाला है ।

फकीर कौम के हैं आर यह राग माला है ।

तलब फजूल है काटे की फूल के बदले

न लें वहिश्त भी हम होम-रूल के बदले ॥

घतन परस्त शहीदों की खाक लायेंगे ।

हम अपनी आंख का सुरमा उसे बनायेंगे ।

गरीब मांके लिये दर्द दुख उठायेंगे ।

यही प्याम चफा कौम को सुनायेंगे ।

तलब फजूल है काटे की फूल के बदले ।

न लें वहिश्ते भी हम होम-रूल के बदले ॥

हमारे वास्ते जन्जीर व तौक गहना है ।

चफा के शौक में गांधी ने जिस को पहिना है

समझ लिया कि हमें रज्ज घों दर्द सहना है ।

मगर ज बां से कहेंगे वही जो कहना है ।

तलब फजूल है काटे की फूल के बदले ।

न लें वहिश्त भी हम होम-रूल के बदले ॥

पहिनाने वाले अगर बेडिया पहिनायेंगे ।

खुशी से कद के गोशे को हम बसायेंगे ॥

जो सन्नी दरे जन्दां के सो भी जायगे ।

यह राग गाके उन्हें नींद से जगायेंगे

तलब फजूल है कांटे की फूल के बदले ।

न लें बहिश्त भी हम होम रुल के बदले ॥

जवां को बन्द किया है यह गाफिलों को है नाज ।

जरा रगों में भी लहका देखलें अन्दाज ।

रहेगा जान के हमराहदिल, का सोजो गुदाज ।

बिता से आयेगी मरने के याद यह आवाज ।

तलब फजूल है कांटे की फूल के बदले ।

न लें बहिश्त भी हम होम रुल के बदले ॥

यही दुआ है बतन की शिकस्ता निहालों की ।

यही उमेद है जयानी के नो निहालों की ।

जा रहनुमा है मोहबत पे मिटने वालों की ।

हमें कस्म है उसी के सपेद बाना की ।

तलब फजूल है कांटे की फूल के बदले ।

न लें बहिश्त भी हम होम रुल के बदले ॥

यही प्याम है कोयल का वाग, के अन्दर ।

इसी हवा में है गगा का जोर आठ पहर ।

दिलाल ईद ने दी है यही दिलों को खबर ।

पुकारता है हिमानय से, अरू उठ उठ कर ।

तलब फजूल है कांटे की फूल के बदले ।

न लें बहिश्त भी हम होम रुल के बदले ॥

बसे हुये है मोहबत से जिनकी कौम के घर ।

वतन का पास है उनको सोहाग से बढ़कर ।
 जो शर क्वार हैं हिन्दूस्तान के लेखे जिगर ।
 यह मां के दूध से लिखा है उनके सीने पर ।
 तलय फजूल है काँटे की फूल के बदले ।
 न लें बहिश्त भी हम होम रूल के बदले

हम होंगे ऐशहोगा और होमरूलहोगा

अहले वतन मुबारक तुम का यह बरम आला ।
 जिस में नई उम्मीदों का है नया उजाला ।
 दुनिया के मजहबों से यह रंग है नराला ।
 मसजिद यही है अपनी और है यही शिवाला ।
 हो होम रूल हासिल अरमान है तो यह है ।
 अब वीन है तो यह है ईमान है तो यह है ।
 शेदाये बोस्तां का सरवे चमन मुबारक ।
 रंगीन तबीयता को रने सँखुंन मुखरक ।
 बुल बुल को गुल मुबारक गुल को चमन मुबारक ।
 हम बेकसों को अपना प्यारा वतन मुबारक ।
 गुन्चे हमारे दिल के हम बाग में बिलेंगे ।
 इस आक से उठे हैं इस खाक में मिलेंगे ।
 इस आक दिल नशी पर बादबसा छुरहाँ है ।
 रूफान बेकसी का हम को सता रहा है ॥

लेकिन यह दौरे इसरत दुनिया से आरहा है ।

मायूस हो न जाना वह दिन भी आरहा है ।

बरतानिया को साया सर पर कबूल होगा ।

हम होंगे पेश होगा और होम रूल होगा ।

कारजार हस्ती

अरजो समा में नूरके साचे में ढल गये ।

सो के उठो कि गौर है आगे निकल गये ॥

बार आइना हरीफ पहिन कर संभल गये ।

शेरी के रजम गाह में तेवर बदल गये ॥

तुम भी दियावो जोहर पैकार रजम में ।

मर्दाना धार बढ़के करो धार रजम में ॥

लश्कर कशा के सफ में तुम्हारा है इन्तजार ।

सीना सिपर हो चढके कि है वक्त कारजार ॥

मैदान के धनी हो, जवानो हो होनहार ।

आगे तुम्हारे किसको है दावा गीरोदार

सोकर उठो कि काफ ले वाले निकल गये ।

आगे बहुत से है तुम से रिसाले निकल गये ॥

बठकर जरा जमाने की टेकी रविश है क्या ।

कौमो में जहो जहद की दावो दविश है क्या

आयन्दा वो गुज शता विल में खलिश है क्या ।

छोडो क्याल काम कि यह चपकलश है क्या ॥

करलो वह आज जो तुम्हें करना है दोस्तो ।
 डूबी हुई है कौम उभरना है, दोस्तो ॥
 उठ कर हवाई किला मसखर करो कोई ।
 दुश्मन पे वार रजम में बढ कर करो कोई ॥
 मैदान कारजार है यह सर करो कोई ।
 कौमी निशां बलन्द फलक पर करो कोई ॥
 उठो कि कल का देख रहे हो यह ख्याब क्या ।
 गफ लत की है पडी हुई मु ह पर निकाब क्या ॥
 दुनिया की रजम गाह है शोहरत का कारजार ।
 अफ सानये अकाबर आलम है, याद गार ॥
 हिम्मत करो बलन्द कि हो इजजतो, वकार ।
 कोशिश करो कि कल का है क्या ग्वार ऐनवार ॥
 ऊँचा हवा में मरसे फरेरा उडा करे ।
 ताऊस बन के कौम का झण्डा उडा करे ॥
 आलात हर्व आज तुम्हारे हैं तुन्दो तेज ।
 और गर्म जहद बो जद का है हगामये सतेज ॥
 रन में बढो, बढो, कि नहीं मौकये गरेज ।
 कल तुम कहा हो और यह कहा तेग, शोला रेज ।
 यह दौरे अमन है, यह तरकी का दौर है ।
 दुनिया का रंग और था पहिले अब और है ।
 गुजर रे हुये ज माने के छोडो क्याल को ।

तोडो तिलिस्म बाद निशातो मलालको ॥

चमकायो आसमापे कौमी हिलाल को ।

हल्के कोहन पहिनायो न लैलाये हाल को ॥

अइवे कोहन का दफनरे पारोना मुर्दा है ।

तलवार फँक भी दो कि यह जंग खुरदा है ॥

यह शाह राहे वक्त में वे अख्तार क्या ।

तुम पीछे फिर के देखने हो, बार, बार क्या ॥

सोकर उठोगे खयाश से रोज़े शुमार क्या ।

नींदों का उतरेगा न तुम्हारे, खुमार क्या ॥

बाँको शिताब अब-नहीं मौका वरेग का ।

सीखो सबक जवानो । शरीफाना जग का ॥

दिन चढ़ गया है खयाश गर्रा से, उठो ! उठो !

आवाज़ आरही है विगुल की सुनो सुनो !

सा आगया गनीम वह सर पर बढो ! बढो ।

दुश्मन लगी गहा है निशाना यचो ! यचो !

हथियार जल्द तेज करो घक्के कार है ।

हस्ती को गर्म मारके ये कार जार है ॥

जब शाम उमर होगई सोकर उठे तो क्या ।

कौमी घकार हाथ से खोकर उठे तो क्या ॥

लुटिया वमें अक्कीर डुयोकर, उठे तो क्या ।

विस्तर से शमसार होकर उठे तो क्या ॥

जब आगया गनीम अजल तिरपे फायदा ।

कोली जो आंख शेष में वस्तर में फायदा ?

खुदाया कैसी मुसीबतोंमें यह हिन्द

वाले पड़े हुये हैं ।

खुदाया कैसी मुसीबतों में यह हिन्द वाले पड़े हुये हैं ।

सितमगरो की अफाये बेहद से दिस पे छाले पड़े हुये हैं ॥

बला किसीपे दगाका नशतर चला किसीपे अफाका खन्जर ।

दिलो जिगर पर इलाही कैसे सितम के भाले पड़े हुये हैं ॥

कई हैं बेकस निकाल डाले कई हुये हैं जेलके हवाले ।

गरीब मजलूम बेकसों के घरों पे ताले पड़े हुये हैं ॥

किसीने अपनी जो दादचाही तो इससे उसपर पडी तथाही ।

अजब मुसीबत का सामना है सितम के पाले पड़े हुये हैं ॥

न हशर तक भी यह पाक होंगे रहेंगे नापाक आफ होंगे ।

खलीफतुल वक्त की तरफ से जो कलब काले पड़े हुये हैं ॥

करो खिलाफत में आके नालिश अरुहोगी तुम्हारी पुरसिश ।

यहां के हुकाम को तो जीने के लाले पड़े हुये हैं ॥

दुजूर हालत से बेखबर हैं इसी सबब से यह सब निडर हैं ।

शरीफों की इज्जतों के पीछे यह बाग वाले पड़े हुये हैं ॥

तुमी से यारब है दाद चाही तुही मिटायेगा यह तथाही ।

बुरी तरह से हमारे पीछे यह जुल्मवाले पड़े हुये हैं ॥
फुगां करे क्या कोई ज़या से जो कुछ कहा तो गया ज़हां से ।
है जिनको अपना खयाल इज्जत धह सरको डाले पड़े हुये हैं ॥
हम क्या है ?

उट्टू है जिस चमन का धाग़ुवा भो वह चमन हम हैं ।
मुझालिफ जिनके हैं अहले वफा वह वे घतन हम हैं ॥
कहां जायें हमारी जान का वचना है अब मुश्किल ।
शिकारी की निगाहों में ही वह काले हिरन हम है ॥
ब जाहिर पिस चुके हैं गरदशे दौरा के हाथोंसे ।
मगर रातिन में फिर भी जैर वज्मो अजमन हम हैं ।
उठायें वाद मरने के किसों का वारे अइसा क्यू ?
अभी से इस लिये बाधे हुये सरसे कफन हम हैं ।
कोई हम को अगर देखे तो इबरत की निगाहों से ।
जो मिट जाता है लइजा भर ही में वह धाकपन हम हैं ।
सरे तसलीम यम रहता है इसरत अच्छे अच्छों का ।
फकीरी में भी रखते इस गजब का वाक पन हम हैं ।

आप अपनी ग़फ़लतों का हम निशाना
होगये

क्या कहें हम तुम से क्या थे और अब क्या होगये ।
बश्म इबरत के लिये गोया तमाशा होगये ॥

हूँ वह तस्वीरें हैं हम इन्कलावे देहर की ।

होके मशहूर जहाँ खसबाँय दुनिया होगये ॥

है हमारी ज़ात में मख्फी जहाँ का जज्जो मद्र ।

वन के बिगड़े और बिगड़ कर तकशे दरिया होगये ॥

या कभी रहती थीं हम से आँजूर्ये दूर दूर ।

या सरापा आज तस्वीरे तमन्ना हांगये ॥

हम वह गुलहे जो कि गाँदे रश्क से मुरझा गया ।

जो कि खटका चश्म हासिद में वह काँटा होगये ।

क्यों निकाले जारहे है मस्कने इसनाम से ।

हम भी क्या अगयार के दिल की तमन्ना हांगये ।

राय भफलत से उठे कब रहबराने कौमो मुल्क ।

मिटते मिटते जब कि हम नकशे कफेपा होगये ॥

हम हैं और महेमुकोविल फितना हाय हशू खेज ।

। जिस कदर यह मिट गये उतने ही पैदा होगये ॥

गौर के जुल्मो सितम का है गिला नशतर अबस ।

आप अपनी गलफतों का हम निशाना होगये ॥

न देखा जायगा गुल्शन में जब दौरे
खिजाँ हम से

न पूछें सुफाँ खस्ता हमारी दास्ताँ हमसे ।

वह दिन याद आतेहैं हमको कि डरता थाँ जहाँ हमसे ॥

हमारी दोस्ती का दम जमाना था जो भरता था ।

वही हम हैं मुखालिफ होगया सांग जहा हमसे ॥
वसूलों से हमारे अहले दुनियाँ दस लेतेथे ।

जहा में अदलो हरियत का कायम था निशाँहम से ॥
वही हम हैं कि अपने हाल पर अर आप राते हैं ।

नहीं होता किसी सुरत भी अर जल्ते फुगा हमसे ॥
भुलाया अपने दिल स सीरते इसलाफ को हमने ।

शिकायत क्या जो घर गणता हुआ है आरमा हमसे ॥
भला हो अहले मगरिय का भलाहो अहले योरूप का ।

जगाया हमको गफलत से जो होकर वेदगुमों हमसे ॥
कभी मुरभाने देंगे हम न अर शख मुराद अपनी ।

नदेखा जायेगा गुलशन में अर दौर बिजां हम से ॥

स्वदेशी गीत

यारव मुझे लुगादे पेसी लगन स्वदेशी ।

हो मेरा मन स्वदेशी हो मेरा तन स्वदेशी ॥

जाहिर स्वदेशी मेरे हर काल फ़ैल स हो ।

आये नजर हर एक को मेरा चलन स्वदेशी ॥

हों वाग हिन्द में फिर पैदा वह गुल वह बूटे ।

इस वाग को बनादे जो हक चमन स्वदेशी ॥

खहर के पैरहन हों गाढेकी पगडिया हों ।

गालिय मशीनरी पर आजाये फन स्वदेशी ॥

पहिनुंगा जीतेजी अब मैं ए गुवार खहर ।

हां वाद मगं भी हो मेरा कफन स्वदेशी ॥

जजबये दिल

यारव हमारे सरामें भर दे हवाय कौमी ।

अकसे सदाय कुन हो दर्दे निदाय कौमी ॥

जो दर्द में मजा है हम दर्द जानते हैं ।

यह दर्द आन नोदिल है मुश्किल कुशाये कौमी ॥

शाहों को यह गदाई कब है नसीब होती ।

सर ताज है जहां का जो है गदाय कौमी ॥

हम एक ही लडी के मोती बने हुये हैं ।

जुल्ले खुदा है अपने सर पर रचाय कौमी ॥

मुफ्ती नहीं हैं लेकिन फतवा तलब दुआ है ।

हर एक बच्चा २ अब शेर गाये कौमी ॥

बिसमिल की यह दुआ है आवाद हो जमाना ।

आंखों मे दिल में हर एक बसती बसाय कौमी ॥

यह इजिज से दुआ है यारव कबूल कर ले ।

आवाद हो हमेशा दौलत सराय कौमी ॥

यारव हमें दिखादे सूरत तरकियों की ।

सर पर हमारे बैठे आकर हुमाय कौमी ॥

इत्तिफाक का बरकत

एक रोज एक का हिन्दसा करने लगा बडाई ।

दस ने कहा कि क्यों है मगर इतना भाई ॥
भी तो हूँ सिफर को पहलु में हूँ बिठाता ।

गोया सिफर के दमसे रोशन हुई खोवाई ॥
देख गो सिफर की मिकदार कुतु नदी है ।

फिर भी तु दाने इसकी यह कदर है बढ़ाई ॥
हिन्दु सा वह दम गुना है मिलकर जो पास बैठे

दम भाइयों में इसने इज्जत मेरा बढ़ाई ॥
तूने कहा ये मुफरद हिन्दुसों में मैं बड़ा हूँ ।

छोटा है एक लेकिन की इसने जग हसाई ॥
दो एक पास बैठें होजायें वह ग्यारह ।

मिलबैठने में देखी हरएक की बढ़ाई ॥
नतीजा

करते हूँ जो तवाजा उन का बड़ा है बनवा ।
जिस तरह कि सिफर से एक को मिलो बढ़ाई ॥

पहलु में जब बच्चों ने छोटी को है बिठाय ।
तनहा बडौसे उनको इज्जत है हाथ छाई ॥

सब इत्तिफाफ के हैं आलम में यह किरिश्में ।
उम्मी लक्ष्म ने उसकी ताजीम है सिखाई ॥

नगमये इत्तिहोद
येसूद तफरुके हैं फिर शेखो ब्राह्मणके ।

बेटे हैं । सख्ते दिल हैं हम मादरे घतन के ।

मिलकर रहें नक्यों कर सब उज्व एक बदन के ॥
परदा उठे दुई का है आबरू इसी में ।

अपने करगे हासल क्या खाक गेर बन के ॥
झोड़ो हसद में जलना उलफत की लौ नगावो ।

हम हैं चिराग़ रोशन सब एक अन्जुमन के ॥
बह रिश्तये मोहब्बत में मुन्सलिक अगर हों ।

बनजायें एक माला सबके दिलोंके मनके ॥
नफरत का है यह आलम नखवत का जोर इतना ।
जाता है कोईखिच कर आता है कोई तन के ॥
देरो हरम में पूजा जब है उसी सनम की ।

बेसूद तफरूके हैं फिर शेखो ब्राह्मण के ॥
फरूख निगाह नर्गिस हैरत से देखती है ।
झेते हैं खाल पीले क्यों फूल दस चमन के ।
(यह नज़म गुजरा घाला के जल्सये तुल्बामें पढी गई
थी जो बहुत मकबूल हुई)

क्याहै परवाह मुझे अग्यार के धमकाने की ।
धमकियां किस लिये देते हो जेलखाने की ॥
जां हथेली पेरखी सिर से कफन बांधा है ।
दिल में हिम्मत है मेरे मुल्क पर मर जाने की ॥
बखुशी तन को मेरे डालदें जन्जीरें वह ।

उमर कटती है यों ही सुल्क के दीवाने की ॥
सकड़ों सर पे मेरे खौफ के यादल'रसे ।

दिलसे काफूर मगर बात है डर जाने की
विजलियाँ लाबगिरे जुल्मो नितम की लेकिन ।

दिलको आदत ही नहीं शाद के घबराने की ॥

तर्क ताल्लुक

हागे नहम जो तर्क ताल्लुक पेकार बन्द ।

होगा न उनके जुल्म का दर जीन्हार बन्द ॥

सरकारहो वा एक दिन सब कार गार बन्द ।

हो डाक बन्द रेल बन्द और तार बन्दा ॥

जो चीज जिस्म पर हो मर हो साख्त हिन्द की ।

टोपी कमीज कोट पाजामा इजार बन्द ॥

हमपर खुलें जब उनकी अजब पेश बन्दियाँ ।

हम ने भी करना उनये क्रिया पेतगार बन्दा ॥

परवाह न करो

रोज होती है हम पे जफा होनेओ ।

गर कोई होने को नाजिल हो बला जाने दो ॥

पेव जोई से सरोकार न रखो हरदम ।

काम पूरा तो कोई घडरे खुदा होने दो ॥

पद घर आयें जो तमन्नायें हैं दिल की सारी ,

मुस्तजाय अपनी कोई एक दुआ होने दो ॥

फिर किसी काम का होना नहीं हरगिज मुश्किल ।

नियत एक बार तो वा सिद्दुको सिफा होने दो ॥

दम में खुरशैद सिफत होंगे यह जुरे ररशा ,

सायये महरे नवीइनपे जरा होने दो ।

चाहते हो कि मिले आवे हयाते गकसूद ।

खिजू "इयत्तास" को फिर राहनुमा होने दो ।

कब तक

करेगा हम पे तू जोरो सितम पे आसमा कबतक,

सहेंगे हम तेरी गरदिश की आखिर सखिया कबतक ।

तेरी गरदिश ने आखिर रपाय से चोका दिया हमको ,

हम उडती देखते दुनियां में अपनी धजियां कबतक ।

न यामोशी की ताकत है न ताये जव्त है अब तो ,

हम होती देखते दुनियां में अपनी खवारियां कबतक ।

द्विफाजत फर्ज है इसलाम की तुझ पर दिलों जा से ,

रहेगा सोचता मुसलिम तू अब सदी जया कबतक ।

सिलाफत जार है हाथ से अब तो सम्भल गाफिल ।

फिरेगा दहर में मुसलिम तू यू वे खानमा कब तक ।

अगर आजाद होना है तो ऐ हिन्दोस्ता चालो !

रहोगे महयजसे नाफये सद्कारवां कब तक ॥

पडी है आके गरदाये जला में कोम की कश्ती ।

यनेगा नाखुदा अपना न हेर पीरो जया कब तक ॥

फिदा होने को तू हिन्दूस्ता पर हो कमर बस्ता ।

रहगा खोचता महसूस तू सूझो जया कब तक ॥

हिम्मत करो जवानो

ये काश मुल्क अपना खोको वो जरूर से निकले ॥१॥

और कोम दस्त चर्ख वेदाद गर से निकले ॥

देरीना सोग यारव हार एक घरसे निकले ॥१॥

और नगमये मसरत दीयारा दरसे निकले ॥

हिम्मत करो जवानो कश्ती भवर से निकले ॥१॥

लो खुल गई घटायें अब साफ आस्मा है ।

वह जोर शोर पहिला तूफान का कहा है ॥

आई हवा सुआफिक तय्यार यादवा है ।

चप्पू चलाओ यारो गर तुम में कुछ तबा है ॥

हिम्मत करो जवानो कश्ती भवर से निकले ॥२॥

कैसा ही पुर फिजा है वह सामने किनारो ।

बागे अदन खुला है जन्नत है आशकारा ॥

तूफा से बच गये हो हिम्मत करो दीयारा ।

जा लेगये सलामत दिलको अगर उमारा ॥

हिम्मत करो जवानो कश्ती भवर से निकले ॥३॥

बेफिक्र क्यों पडे हो कुछ हाथ भी हिलावो ।
 गर दाब से निकल कर चाहे मजे, उड़ावो ॥
 साहल भी सामने हो फिर भी न हो बचावो ।
 खानत है अपनी हस्ती गर इस तरह मिटावो ॥
 हिम्मत करो जवाना कश्ती भवरसे निकले ॥ ४ ॥
 डूबे अगर यहां तुम यह लोग क्या कहेंगे ।
 हां तुम को नंगे गुरत सब बरमला कहेंगे ॥
 नाकारा छुस्तहिम्मत गुजरा गया कहेंगे ।
 इससे भी बढ़के शायद तुम को बुरा कहेंगे ॥
 हिम्मत करो जवानों कश्ती भवर से निकले ॥ ५ ॥
 गफलत से बाज आवो फुरसत है कोई दमकी ।
 ऐसा नहो कि देखो फिर, राह सब अदम की ॥
 छाजार्ये सिरपे होकर तूफा घटार्ये गम की ।
 गिर जाये आशमा से विजली काई सितम की ॥
 हिम्मत करो जवानो कश्ती भवर से निकले ॥ ६ ॥
 कश्ती भंवर से निकली कोशिश से गर तुम्हारी ।
 खुश होके खरक देगी, शावाश तुमको सारी ॥
 अपनी भी जां बचेगी इज्जत भी होगी भारी ।
 बरकार है दिलेरो एक दम की होशियारी ॥
 हिम्मत करो जवानो कश्ती भं वर से निकले ॥ ७ ॥
 हिम्मत करो जवानों, हिम्मत के आरनानो !
 गर कुछ दिक्कतारी है दिक्कलावो पहलवानों ॥
 हां जोश नौजवानी जाहिर करो जवानो ।

गुज़्र आजमा दिलेरो मैदान के यगानो ।
 हिम्मत करो जवानो कशती भवर से निकले ॥ ८ ॥
 दिक्कलावो जीरे बाजू भुंभलावो शेर मर्दो ।
 गर कुछ हिले समन्दर छातो को चाक करदो ॥
 मौजे फना के मुहको मिट्टी से उठ के भरदो ।
 अपनी सलीमती की बद्बवाह को खबर दो ॥
 हिम्मत करो जवानो कशती भवर से निकले ॥ ९ ॥
 किरती जो कौम का है मझघार में फसी है ।
 किरती सघार हैरां । हसरत है बेकसी है ॥
 मायूस हो रहे हैं और दिलको बेकसी है ।
 है आसरा खुदा का उम्मीद एक यही है ॥
 हिम्मत करो जवानो कशती भवर से निकले ॥ १० ॥
 कामे नहग ताऊन चारों तरफ खुला है
 मंडलाती फिरती हरफलास की बला है
 गफलत की काली काली छाई हुई घटा है
 बहरे अजर नहीं हो मझकमकी सदा है ।
 हिम्मत करो जवानो कशती भवर से निकले ॥ ११ ॥
 तुकौम यागे, हिन्द को यागे, जिनां बना
 अस आना जेर साबा बरक तपां बना ।
 अतरे में जो खमत हो वहां आशपां बना ॥

बागि बराये गुर से गोश आशना न हो ।

सालारजिस का गांधी हो वह कारवा बना ॥
हो गरविशे जमाने से कुछ यह भी वह सवर ।

इस आत्मा पे और तू एक आश्मां बना ॥
पे कौम हो सफीनये ईसार में सवार ।

अपने लहू से आज तू सैल रेवां बना ॥
शामो इराक अर्ध में शमशेर ज न है क्या ।

हिन्दी हे तू तो हिन्द को रक्षक जिना बना ॥
मिस्ले हुमा है गर तुम्हे रोहरत की आरजू ।

रहने वो लामका से परे तू मकां बना ।
सम्याद का खतर हो न गुलची का खोफ हो

पे कौम बाग हिन्द को बागे जिना बना ॥
बादे सनम को छोड के चिश्ती पये रकीम

बन्दूक तोप खन्जरो तेगो सिना बना ।

शहीदों की यादगार

घतन के नाम पर दी जान जिन शहीदों ने

सितम कशी की रसी आन जिन शहीदाने ॥
बलन्द कौम की शान जिन शहीदों ने ।

सर अपने कर दिये कुर्बान जिन शहीदों ने ॥
तडप कर मर गये जो मुर्ग, नीमजा की तरह ।

लह में गर्क हुये सैद वे जर्बा की तरह ॥
जो नाम कर गये सिर दे के जा नमारी का ।

जहाँ में शोर है जिनकी वफा शआरी का ॥
न खौफ था जिन्हें तोपों की शोलावारी का ।

जिन्हे गिरा हुआ सदमा ज खम फारी का ॥
लह से जिन के हुई मुख याक दिल्ली में ।

बधी ह जिन की शहादत ने धाक दिल्ली में ॥
गज़ब का जिन के जनाजो पे अज देहांम हुआ ।

शुमार जिस का न था वह हजूम आम हुआ ।
फिदाईयानि पतन का वह पहतराम हुआ ।

कि नकशे दिलके नगिनो पर उनका नाम हुआ ॥
हर एकशाख ने आसु बहाये उन के लिये ।

कि रोये फूट के अपने पराये उन के लिये ॥
इक हाल उन के लिये शान दाग बनता हे ।

सितम कशों के लिये यादगार बनता है ॥
वफा का नकश सरे रह गुनार बनता है ।

यह मरमिटों का निशाने मजार बनता हे ॥
हर एक शरस पे तामीर फर्ज है इसकी ।

हजार तरह से तदधीर फर्ज है इसकी ॥
बटा के हाथ दो इस कौमी काम का चन्दा ।

गिरह से निकले शहीदों के नाम का चन्दा ।
हजार का हो कि एक दाम का चन्दा ।

हो पब्लिक हाल में हरखासो आमका चन्दा ॥
वह हाथ उठाये जो हुब्बे वतन का शैदा है ।

सवाबे आम है दे जिस को जो कि पैदा है ॥
ओ आज नाम से चन्दे के मु ह छिपावोगे ।

तो फिर जहां को किस मुंह से मु ह दिखावोगे ।
कमी जो नाम शहीदों का मु ह पे लावोगे ।

वह याद रखना कि गे,रो से मुंह की खावोगे ॥
कहेंगे लोग शहीदों को अपने भूल गये ।

वह अपनी जान से इन के लिये फ जूल गये ॥
हर एक तरफ से मुनासिब है वारिशे जर हो ।

न टूटे तार लगा तार हो बराबर हो ॥
खुसलियत नहीं मुफलिस हो या तषगर हो ।

यह कारे खैर है दे जिस को जो मयस्तर हो ॥
हो याद गार ज माना वह पब्लिक हाल बने ।

‘खलीक’ कौमी इमारत है बेमिसाल बने ॥
इसलिये तुमहिन्द में आयेथे इङ्गलिसतोन से

जी में हैं सौ हसरतें दिल में सौ भरमान से ।

होते २ होगये हम तंग अपनी जान से ॥

सखियां यूँ अहले यौरुप अदल हिन्दूस्तान से ।
 इसलिये तुम हिन्द में आये थे इ गिलस्तान से ?
 हाय अमृतसर में बन कर टोलियों की टोलियां ।
 बे गुनाहों पर चलाई किस गजब से गोलियां ॥
 हम से तो तुम क्या गये तुम तो गये ईमान से ।
 इस लिये तुम हिन्द में आये थे इ इल्लिस्तान से ?
 जब तुम्हें मुश्किल पड़ी कि हमने तन आसानियां ।
 मालो जर सिद्धा किबा बच्चों की दी कुर्यानियां ॥
 फिर गये तुम फिर भी अपने अहद से पैमान से ।
 इस लिये तुम हिन्द में आये थे इ इल्लिस्तान से ?
 हम तुम्हारे वास्ते हिन्दू मुसलमान सब लड़े ।
 हमने जब फरियाद की तो जेलखानों में पड़े ॥
 खूब यह बदला दिया अहसान का अहसान से ।
 इस लिये तुम हिन्द में आये थे इ इल्लिस्तान से ?
 लैकहों लाखों हजारों पाई पाई तुमको दी ।
 हमने मेहनत से कमाकर सब कमाई तुम को दी ॥
 क्या किबा टरकी से तुम ने क्या किया छुस्तान से ।
 इस लिये तुम हिन्द में आये थे इ इल्लिस्तान से ?
 हिन्द से आबाद दुनिया हिन्द ही बरबाद हो ।
 शाद तुम जिसकी बदौलत हो वही नाशाद हो ॥
 शानो शोकत इसकी मिट जाये रहो तुम शान से ।

इस लिये तुम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ?
 तुम यह कहते हो कि 'हाजी हांजी हम कहते रहे ।
 तुम सितम करते रहो और हम सितम सहते रहे ॥
 तुम जो चाहो हमसे कुरवालो पजड कर कान से ।
 इस लिये तुम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ॥
 तुमने यह ठानी नहीं सुनना किसी फरियाद का ।
 हमने यह ठानी की बस जाने ही वै हमदाद को ॥
 वेद से साबित है यह रोशन है यह कुरआन से ।
 इस लिये तुम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ?

इसलिये हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से

धन के ताजिर घर से निकले हम निराती शान से ।
 चाल क्रया अच्छी चले हम अहले हिन्दुस्तान से ॥
 कर लिया उनको मुसरखर देखकर नदान से ।
 इस लिये हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ॥
 हिन्द में है जोर वाजू पर हुकूमत की बिना ॥
 जलिया वाले का हे ताजा अभी नो हादिसा ॥
 इफमरानी को बदलदें किस तरह ईमान से ॥
 इसलिये हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ॥
 तुम हमारे वास्ते करते न प्रयो आसानियां ।
 हमने करली अपने कर्जे में तुम्हारी रोटियां ॥

दाम में लाये तुम्हें हम वादा घो पैमान से ।
 इस लिये हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ॥
 हमने लडवाया तुम्हे आपस में इस मं शक है क्या ।
 अपना उल्लू गन पडा जिस ढग से सीधा किया ॥
 कर लिया मगलूर तुमको जान कर अनजान से ।
 इस लिये हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ॥
 जिस तरह ठे आज - हिन्दुस्ता हमारे जेर पा ।
 एक दिन महकूम हो जायेगा सारा एशिया ॥
 जो किया सुलतान से वैसा करे जापान से ।
 इस लिये हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ॥
 हिन्द हो आगाद या इफलास से बरगाद हो ।
 लेकिन इङ्गलिशमैन का घर हर तरह आगाद हो ॥
 जिल्लत काले स्पेई गोरे गुजार शान से ।
 इस लिये हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ॥
 जो हमारा हुफम हो उस पर कहो तुम जी हुजूर ।
 नेको बद् को हम समझने हैं नहीं तुम को शऊर ॥
 खिदमतें तुमसे हमेशा लें पकड कर कान से ।
 इस लिय हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ॥
 पालिसी अपनी नहीं सुनना किसी फरियाद को ।
 बीन देरों अब पहुचता है तुम्हारी दाद को ॥
 पया डरेंगे हम तुम्हारे वेद और कुरआन से ।

इस लिये तुम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ?
 तुम यह कहते हो कि 'हांजी हांजी हम कहते रहे ।
 तुम सितम करते रहे और हम सितम मंइते रहे ॥
 तुम जो चाहे हमसे करवालो पकड कर कान से ।
 इस लिये तुम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ॥
 तुमने यह ठानी नहीं सुनना किसी फरियाद को ।
 हमने यह ठानी की थस जाने ही वै इमदाद को ॥
 वेद से सावित है यह रोशन है यह कुंआन से ।
 इस लिये तुम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ?

इसलिये हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से

बन के ताजिर घर से निकले हम निराती शान से ।
 चाल फया अच्छी चले हम अहले हिन्दुस्तान से ॥
 कर लिया उनको मुसखर देखकर नादान से ।
 इस लिये हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ॥
 हिन्द में है जोर बाजू पर हुकमत की बिना ॥
 जलियां वाले का है ताला अभी नो हादिसा ॥
 हुकमरानी को बदलें किस तरह ईमान से ॥
 इसलिये हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ॥
 तुम हमारे वास्ते करते न क्यों आसानिया ।
 हमने करली अपने कर्जे में तुम्हानी रोटियां ॥

दाम में लाये तुम्हें हम वादा धो पैमान से ।
 इस लिये हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ॥
 हमने लडवाया तुम्हे आपस में इस मं शक है क्या ।
 अपना उल्लू बन पडा जिस ढग से सीधा किया ॥
 कर लिया मग़लूब तुमको जान कर अनजान से ।
 इस लिये हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ॥
 जिस तरह है आज हिन्दुस्ता हमारे जेर पा ।
 एक दिन महकूम हो जायेगा सारा एशिया ॥
 जो किया मुलतान से वैसा करे जापान से ।
 इस लिये हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ॥
 हिन्द हो आवाद या इफ़लास से घरवाद हो ।
 लेकिन इङ्गलिशमैन का घर हर तरह आवाद हो ॥
 जिल्लते काले यह गोरे गुजार शान से ।
 इस लिये हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ॥
 जो हमारा हुकम हो उस पर कहो तुम जी हुजूर ।
 नेको बद को हम समझते हैं नहीं तुम को शऊर ॥
 खिदमतें तुमसे हमेशा लें पकड कर कान से ।
 इस लिये हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ॥
 पालिसी अपनी नहीं सुनना, किसी फरियाद को ।
 वौन देखें अब पहुचता है तुम्हांगे दाद को ॥
 क्या डरेंगे हम तुम्हारे वेद और कुरआन से ।

मुझे हाँ कीजिये, जेरे हावालात ॥

अदालत गर जिरह मुझ पर करेगी ।

सुनूंगा गौर से उस के सवालात ॥

मगर चुप हो रहूँगा मेरी निसवत

करेंगे गौर इस्तफसार हालात ॥

मे सुनकर अपने जुरमों को कहूँगा ।

कि यह बातें हैं अज् किस्मे महालात ॥

पडा सडता रहूँगा जेल में मैं ।

मुझे हर तरह के होंगे जवालात ॥

मेरी करतूत पर बहसगे अहभाव ।

न होंगे एकसा सबके मुकालात ॥

मगर परवाह नहीं मुझको कुछ इसकी ।

कि मैंने मार दी दुनियां पै अब लात ॥

मकूला शायर ।

यह हुस्न नियत और अज्म मुसम्मम् ।

न ही जय तक नहीं हासिल कमालात ॥

स्वदेशी धाई काट अदम तश्चावुन ।

निहत्यों के लिये हरवी हें आलात ॥

मरोसा तू भी रय गाधी पे स्वराज ।

मिलेगा करेगा न कुछ पदतमालात ॥

[गुर्ज कुर्मान हो तुम भारत पे इससाल ॥

दिखा दो करके कायम कुछ मसालात ॥

एक पोलीटीकल कैदो के दिलो जज्बात

कैद क्या नोज है ? होती है मशकत कैसी ?

लाइये भर पर उठालूँ यह, मुसीबत कैसी ॥

जुर्म इन्बुलवतनी के लिये बांधा मुझको ।

की मेरे साथ अदालत ने अदावत कैसी ॥

शौक परधाज में देखा तो मेरे परकतरे ।

पूरी मिकागज के हाथों हुई हसरत कैसी ॥

शिकवये जोर पे हाकिम ने दहा बन्द किया । - ।

रफा सरकार ने की मेरी शिकायत कैसी ॥

अपने इफराद के हाथों से हुई जो बरबाद ।

काबिले रहम है उस कौम की हालत कैसी

दिल जो आज आद है सीने में तो गम काहे का ?

क्या हयालात है? होती है हरासत कैसी ?

वह तो राहत है मसरत है हकीकत में फलक ।

कौम के वास्ते जो आये वह आफत कैसी ?

च्युंटी और राखीब्रादर्स

कल कोई नगही सी च्युंटी अपने मुह में कुछ लिये ।

दौडती तेज़ी से देखो मैंने एक बाज़ार में ॥

याद में तेरी मुझे रहती है हरदम बेकली ॥
मैं हूँ इतमीनान से डासल है मुझको शान्ती ।

तू है क्षतरानी तुझे शायों नहीं है बेकली ॥
शान्ती रख बेकली से अशक शॉखा में न भर ।
दिल में अपने धीर घर ऐ प्यारी माता गम न कर ॥

तरानये फलक

वाग से सरे सर का भौंका आशियाना ले गया ।

अन्वलीवों का कफस में आवो 'दाना' ले गया ॥
कौन कहता है जबरदस्ती से हम पकड़े गये ।

जेल में खुद हम को शौके जेलघाना ले गया ॥
कुछ गुलो गुलचीशा शिकवाबुलबुले भारत न कर ।

तुझको पिजरे में है तेरा चहचहाना ले गया ॥
क्यों घटा अदवार की छाये न अहले हिन्द पर ।

खींच कर यौम्प है खय मालो सजाना ले गया ।
पूछते क्या हो जमींदारों की दौलत क्या हुई ।

कुछ घकील और नशा कुछकुछ मालयाना ले गया
शुमये कि स्मृत से एक दाना को हम तरसा किये ।

भोलियां भर कर वगरना कुल जोमना ले गया ।
भूक से क्योंकर न तड़पें हिन्द के बच्चे फलक !

खींच कर शाली भावर दाना दाना ले गया ॥

शाह से कहना हमारे हिन्द खस्ता हाल है

देखलो हजरत डियूक खुद मुल्क की क्या चाल है ।

शाह से कहना हमारे हिन्द खस्ता हाल है ॥

आपको ढालान जो बतला रहे है दुखमरा ।

राग उनका दर हकीकत बेपुरा बेतान है ॥
हिन्द मुतमैयन नहीं है आपकी स्कीम से ।

आपके आने पे हरजा इसलिये हडनाल है ॥
आपके भेजे हुवों न अपने मतलब के लिये ।

हिन्द के लोगों से हानिल कर लिया सब माल है ॥
फर्क काल और गोरे का मिटा अब तक नहीं ।

दौर दौरा खुद पसदी का वही ताहाल है ॥
इस कदर हिन्दी हुकूमत से हुये हैं मुस्तफीद ।

रोजमर्रा मुल्क में पडने लगा अब काल है ॥
आये दिन अब गाँडिया लडने लगी हैं राह में ।

इसन आला है यह उनका और वह अपना हाल है ॥
क्या शिकायत है डियूक की क्या गिला है शाह का ।

हम तो कहते है बहर यह शामते आमास है ॥
मयस्सर देखिये होगी, हमे आज्ञादियां

रहेगा हम गरोबों पर फलकना मेहरबा कबतक ।

रुलायेगा हमें यूँ इन्कलावे आस्मां कबतक ॥

पिराये जायंगे अशकों के कबतक हार आयों में ।

रहेगी बेमसर अपनी खुदा आहो फुर्गा कबतक ॥

लहेंगे कबतक हम रज्ज अपनी बेनवाई का ।

उठायें नायगी सद्मे यह जाने नातवां कबतक ॥

गिरेंगा कबतक सोजे फुर्गा की रिजलियां दिलपर ।

जलेंगे आंतशे गम में हमारे उस्तरा कबतक ॥

कफस में कबतक तडपेंगे हम बेबालो पर योंही ।

फिराके शहिदे गुल में रहेंगे खूबगां कबतक ॥

मिलेंगे हम सफीराने चमन से कब खुदा जाने ।

मयसर देखिये होगी हमें आजादियां कबतक ॥

यह दिन आजादियों के और रातें वह मुरादों की ।

दिखायेंगा हमें आनन्द दोरे आस्मां कबतक ॥

लाख की एक बात ।

कोई कहता है कि साहबों से मुलाकात करो ।

कोई कहता है मियां तर्कमवालात करो ॥

कोई कहता है कि दबकर रहो हर एक से तुम ।

कोई कहता है कि आज दि ब्यालात करो ॥

कोई कहता है कि बसरकर दो खुशी से अपनी ।

कोई कहता है तहश्ये मकरसात करो ॥

कोई कहता है जूवा पर रहे सयका शिकवा ।

कोई कहता है कि किसी की न शिकायात करो ॥

कोई कहता है करो जिदमते मरफार की सदा ।

कोई कहता है कि श्रय तक सतायात करो ॥

कोई कहना है कि अकेले ही रहो यन्दा नवाज ।

कोई कहता है कि हर एक से मवाखात करो ॥

कोई कहता है सदा जेल से डरते रहो तुम ।

कोई कहता है मियाँ शोके हवालात करो ॥

कोई कहता है कि सुनो ताजा फसाना साहिय ।

और अत्र तक सभी कहना हिकायात करो ॥

कोई ख्वाह कुल भी कहे नूर पे मैं कहता हू ।

फायदा जिस से कि हो मुल्क को बढ नात करो ॥

आज

सुनअत न कोई फ न है न इल्मो हुनर है आज ।

हिन्दूस्ता का हाल व रगे दिगर है आज ॥

सोने की चिड़िया कहते हैं जिस को यह हिन्द था ।

अफसोस बेजुरी से वह घेवालो पर है आज ॥

जो जल्दा गाह मरदुमे कुदसी सिफात था ।

सब हैफ बन्दरो का वही मुस्तकर है आज ॥

हर तिफज हर जधान हर एक पीर कोहना साख ॥

बाकी है जिस ज़मीं पर गुज़रे हुओं की शाने ।

अब तक लटक रही है टूटी हुई कमाने ॥

जिस की फुजाये आलम में गू जती थीं ताने ।

उस सरज़मीं को फिर क्यों खुलें, वरीं न माने ॥

मेरा वतन वही है मेरा वतन, वही है ॥

नारद ने देश भक्ती जिन देश को सिखाई ।

और इस लगन में जां तक कुरबान कर दिखाई ।

धुंधे वतन की जिसने थी लहर इक चलाई ।

जिसके लिये शहादत इस ताजवर ने पाई ॥

मेरा वतन वही है मेरा वतन वही है ॥

औतार सत्य ग्रह का गांधी जहां पला है ।

और जिस वतन की खातिर सर्वस्व देखुफा है ॥

जिस कश्तिये वतन का गांधी सा ना खुदा है ।

रस्मो शत्रार शिवा जिस देश का घफा है ॥

मेरा वतन वही मेरा वतन वही है ॥

पंडित तिलक महाराज आदिम थे जिस अदन के ।

और मोतीलाल नहरू बुल बुल हैं जिस चमन के ॥

दीनार से पिसर है जिस मादरे वतन के ।

जिस के लिये हैं नारे शमशेर जून विपिन के ॥

मेरा वतन वही है मेरा वतन वही है ॥

जिस आस्मा के अदतर हैं मालवी दरखशां ।

शोकत अली जहां है मिस्ले गुले गुलस्तां ॥
हसरत महात्मा है सौ दिल से जिलपे कुर्गां ।

फजंन्द जिसके दोनों हैं हिन्दू औ मुसलमा ॥
मेरा घतन वही है मेरा घतन वही है ॥

जिस के हकीम अजमल और श्रदानन्द सर है ।
और लाजपत जहा के बेताज ताजवर है ॥

किचलू, राम भजदत्त, खुरशैद हों कमर हैं ।
सत्य पाल किचलू जिस के लखने दिलो जिगरहैं ॥

मेरा घतन वही है मेरा घतन वही है ॥
है नोहा साज जिसके इकवाल से सखु भवर ।

कन्दा हूँ जिस हवा पर अशआर मीरो अकबर ॥
हजरत फलक गये हैं जन्दा में जिसकी खातिर ।

और नाज मुब्तदी भी कहता है जिसको अकसर
मेरा घतन वही है मेरा घतन वही है ॥

सार जहां का दिल है हिन्दूस्तां हमारा

बदलेगा अब यकीं है वहमो गुमा हमारा ।

शक को मिटा रखा है हकुल वया हमारा ॥

रोशन है हाल दिल सब आइना सां हमारा ।

जौहर दिखा रखा है हुस्ने वया हमारा ॥

फुरकत में कुश्तगा की लायेगा रंग एक दिन ।

खूने शहीद बन कर दरदो फुर्गां हमारा ॥

जो आंसू से गिरा है कतरा वह बेबहा है ।

दुर दाना बन गया है अर्क खां हमारा ॥

दिल की तडप तुम्हें भी तडपायगी सितम गर ।

। विजली, बना हुआ है दर्दे गिहा हमारा ॥

तै हो गई है राहे दुश्वार हिम्मतों स ।

मज्जिन पे आगया है अय कारवां हमारा ॥

है बेकमी निगहवां गुरवत के हैं हवाले ।

हसरत से तंकेते हे मु ह वा रफतगां हमारा ॥

अय दाग़ दिल का होगा हरजू चलन जहा मैं ।

घनकर चलेगा सिका नामो निशा हमारा ॥

हसरत जवान की है अरमा जईफ़ का है ॥

सारे जहाँ का दिल है हिन्दुस्तां हमारा ॥

अरमा भरा हुआ दिल खाली है हसरतों से ।

। शोबाद देखिये कब होगा मर्का हमारा ॥

फरियाद रस बनाये अफ मोस किसको रौनक ।

सुनता नहीं खुदा भी शेवन यहाँ हमारा ॥

हिन्दुस्तान मेरा

जमी मेरी वही है पर नहीं अब आस्मा मेरी ।

विरादरतक जुदा है आज, फल था फूल जहाँ मेरी ॥

जरा होशियार रहना इस से यह चले सितम पेशा ।

फयामत है खुदा का कहर है सोजे निहा मेरा ॥

किसी को क्या अगर मैं हालगम कहता हू कहने दें ।

है मेरा दिल, क्यों मेरा, जया मेरी दहन मेरा ॥

गुलो नसरीनसुबुल की जगह अथ खाक उडनी है ।

उजाडा हाथ फिम वेदद ने यू गुलिस्ना मेरा ॥

भलाई है वतन की गर तो अपनी भी भलाई है ।

जुदा उससे कभी मुमकिन नहीं सुदो जयों मेरा ॥

जमाने की है नयरगो कि अथ तरतुसरा में है ।

कभी अर्श मुअलना पर अजीजो था मकां मेरा ॥

दिलेरी में कभी था पास अथ भी जिसका जी चाहे ।

करे आहो फुर्गा में टर्ब गम में इम्तहा मेरा ॥

गुजरता है जो दिल पर मानरा उसका फहू किससे ।

बज्जुज जाते खुदा है कोन कहिये राजदा मेरा ॥

तयाही जिसकी किस्मत में लिपी बक हसद से थी ।

उसी गुलशन की शाखे खुशक पर है आशिया मेरा ॥

नदिलमें दर्द है उसका न दो आंसू हैं आयों में ।

कहो किस मुह से कहते हो कि है हिन्दूस्तां मरा ॥

हो मरकुलमौत या सी० आई० डी० सँ कुछ ताल्लुक है ।

कहो तो क्या करोगे पूछ कर नामो निशा मेरा ॥

वर था दिलावरो का क्या यह वतन वही है?

दाचे में कौम तेरे कुछ हडिया है बाकी ।

उजडे हुये चमत में कुछ आशिया है बाकी ॥

इसलाफ़ के जहाँ में कुछ २ निशा है वाकी ।

वह जाहरे शराफत तुम्ह में कहां है वाकी ॥

तुफ़ २ है वाम तेरी हसरत नसीबों पर ।

जिह्मत नसीबों है जिह्मत नसीबों पर ॥

दिल सर्व है रगो में गोया लहू नहीं है ।

हुव्वे वतन की हम में वह आह वू नहीं है ॥

वह बलबले नहीं हैं वह आजू नहीं है ।

गुम है रहे तलय में वह जुस्तजू नहीं है ॥

गुम करवा कारवा में जो मीर कारवां थे ।

वे नामो वे निशा हैं जो साहबे निशां थे ॥

हम फौक लेगये थे रफ़अत में इक जहां से ।

ऊची ज़मीं हमारी थे वाम आस्मा से ॥

मोती कमी बरसते थे ताज घर निशां से ॥

आं रू टपक रहे हैं वाचश्म खू चका से ॥

टुकडे जो नाल के थे लखते दिले खजों है ।

जोशब चिराग थे वह फरियाद आतशीं हैं ॥

महफिल में झलमलाते हैं कुछ चिराग अपने ।

सब उठ गये जहां से रौशन दिमाग अपने ॥

हैं यादगार हसरत कुछ दिल दिमाग अपने ।

कलकाये आस्माने भरकर अयाग अपने ॥

अब आह वह कहां है बज्मे कीहन का नकशा ।

धिगडा हुआ है यानी अपने घतेन का नक्शा ॥

लागो जगन का मन्कन है आह अब चमन में ॥

धुन्धली सी शमा है एक यारों की अन्जुमन में ॥

पुतला है चेकसी का लपटा हुआ कफन में ॥

उडतो है खाक हसरत अब कूबकू घतन में ॥

कैसा घतन घतन का एक नाम रह गया है ।

यह मैकदे में याकी एक जाम रह गया है ॥

दादे कमान गर दी अजुन ते जिस जमी परा ॥

भीष्म सा शमा था जिस जापे कोद पै कर ॥

मिट्टी से जिसको उठा प्रताप सा दिनावर ।

मैदान में रहा जो बरसों हरीफ अकबर ॥

घर था दिनावरों का क्या यह घतेन वही है ॥

सीचा गया था खूँ से क्या यह चमन वही है ॥

जौहर वही है तुकमें क्या ओ घतेन की मिट्टी !

रगी है अब भी खूँ से क्या तू चमन की मिट्टी ?

घरबाक होरही है वज्जे कोहन की मिट्टी ।

यारों की खाक उगान दे ओ अन्जुमन की मिट्टी ॥

नक्शा वही नजर में फिर जाये फिर घतन का ।

फिर रगो रुप निखरे उजड हुये चमन का ॥

बामे फलक से ऊचा हो फिर निशा हमारी ।

सारे जहां में हम हों सारों जहां हमारी ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अर्थे वरी का जीना हो आस्मा हमारा ।

जन्नत निशा घने फिर हिन्दुस्ता हमारा ॥

फूटें नये शिगूफे फिर नखले, आरजू में ।

गर्मी बढे दिलों में सुरअत बढे दिलों में ॥

नवयुवको का एकदेशभक्त का सन्देश

उजडा हुआ पडा है सब गुलिस्तान भारत ।

बरवाद होचुका हैं जन्नत निशान भारत ॥

पहिले तमाम चाकू अथ होगये फसाने ।

जाती रही यकायक वह आन यान भारत ॥

भारत की हाथ कशती गरदाय में फसी है,

किस नौद सोरहे हो प कशती बान भारत ॥

बठ बैठो नौ जवानो अब तो, इसे बचालो ।

कुछ कुछ अभी है चाकी नामो निशान भारत ॥

गर होश में तुम आवो तो कुछ नहीं है मुशकिल ।
हू फिर यही देख लेना पहिली सी शान भारत ॥

मालूम है तुम्हे कुछ रोजे अजल से सब के ।

उस्ताद रहते आये हैं आलमाने भारत ॥

लेकिन हमारी हालत अब रहम के है काबिल ।

बदशी कहा रहे अब बाशिन्द गान भारत ॥

इसकी वह शान शौकत सब चाक में मिली है ।

यही हुये हैं यही रहेंगे, तान किसी की नहीं सहेंगे ।
जो जी में है वही कहेंगे, है यह सत्य मुक्ति का द्वार ।
है यह हिन्दुस्तान हमारा ॥

हिन्दू सुस्लाम और ईसाई, सिक्ख, पारसी, जैनी भाई ।
सबके सय इसके शैदाई, कहते हैं यह देश हमारा ।
है यह हिन्दुस्तान हमारा ॥

मिलेगा हाथसे तेरे हमे जालिम शिफा कब तक
करेगा ए फलक हम पर भला जोरो जफा कब तक ।

मिलेगा हाथ से तेरे हमे जालिम शिफा कब तक ॥
रहेगा कब तलक भारत में डेरा रजो कुलफत का ।
रहेंगे हिन्द के थालो फिकर यां रहनुमा कब तक ॥

हाय काफूर है यारो कदीमी शानो शौकत सब ।
रहेंगे या खुदा हिन्दूस्ता वाले गदा कब तक ॥
नहसत में सितारा है प्यारे हिन्द का अब तो ।

हाय गमसे रहेगा हिन्द प्यारा आशुना कब तक
है ऐसी जिन्दगी से तो पे यारो मौत ही अच्छे ।

मगर जाने खुदा कि आयेगी या पर कड़ा कब तक ।
रहेगा कब तलक हिन्दूस्ता में हरका कुलफत का ।

यहा से होवेगा रुखसत फिकर मुश्किल कुशाकबतक ॥
कदीमा शान पर अब छोडदे तुम मारना डीगे ।

गुजस्ता शान पर करते रहोगे मरहया कबतक ॥
 अगर है हिन्द से उलफन बनो इतहाद के हामी ।
 रहेगी जोरी पर ना इतफाकी की सदा कबतक ॥
 बहुत कुछ कह चुका है ये प्रिशाक अब बन्द कर नाली ।
 रहेगा कौम से होशयारी का तू मुलतजा कबतक ॥

दुआ लेलो यही दिन है

दुआ लेलो यही दिन है बिचारी हिन्द मादर से ।
 यह ओखर फिर मिल नही सकना जयानो फिरनयेसरसे ॥
 मिली होगी किसी नेशन को आजादी मुफदर से ।
 दुआ होगा किसी का राज हम तो उमूभरतरसे ॥
 शहीदों का लह रर देश पर बरसे तो यू बरसे ।
 'कि पैदा' हो निहा हो कौमयत भारत में घर घर से ॥
 बिचारी मादरे भारत की हालत पूछते क्या हो ।
 पडी है जाक पर वह मुह ढके गैरन की चादरसे ॥
 अभी से इस कदर नफरत हथकड़ियों के फगन से ।
 बधेगा एक दिन सेहरा शहादत का तेरे सरसे ॥

हालत कौम

ए कौम देख तो तेरी हालत, को क्या हुआ ।
 हैरत में आना है कि सूरत, को क्या हुआ ॥
 जय से कर्मा की तरह, कमर सब की झुक गई-

अर्जुन भी पूछता है कि हिम्मत को क्या हुआ ॥
मारे जो कोई फूँक तो उड़ जाये अहले हिन्द ।

चक्र में भीमसेन है ताकत को क्या हुआ ॥
हम को जलील खस्ता ओ मजबूर देख कर ।

प्रताप कह रहा है हमय्यत को क्या हुआ ॥
जिसने बड़े बड़ों के छुके छुड़ा दिये ।

उस शूरवीर कौम की हिम्मत को क्या हुआ ॥
इफलास में फसे हुये भारत को देख कर ।

हेरत में गजनवी है कि दौलत का क्या हुआ ॥
भाई को प्यासा देख के भाई के खून का ।

लक्ष्मण पुकारता है कि मुहम्बत को क्या हुआ ॥
इतने बहादुरों को फलक पागई ज़मीन ।

हरा है पृथ्वीराज शुजाशत को क्या हुआ ॥

दर्द दिल

हिन्द का उफ इन दिनों कैसा मुकद्दर होगया ।

जो कभी अलमास था वह काला पत्थर होगया ॥
ताज दुनिया का कभी कह जाता था प्यारा वतन ।

आज है पुर दर्द दिल का तेज नशतर होगया ॥
जो मुँहक सोना कभी था आज मिट्टी भी नहीं ।

किस कदर बेकीमती नायाब गीहर होगया ॥

रोजो शय हू रोता रहता हिन्द की हालत पे मैं ।

अबनीसां से भी मेरा रोना बरतर होगया ॥
बेकसी ओ नातधानी ताज सर हँ बन गई ।

जहर से भी बढके है अब आबे कौसर होगया ॥

ऐशो राहत के किनारे से उठाया बादलों ।
र जो गम के साहलों पर हैफ लगर होगया ॥

सर्द आहँ हँ निकलती इस दिले पुर जोश से ।

आस्मा नारीक कैसे रोशन अबतर होगया ॥

हुब्बे कीमी में कभी यहशत जो मुझको होगई ।

टुकडे २ फिर गरेषा मेरा अबसर होगया ॥

जजबये हुब्बे बतन दिल में हुवा है मोजजन ।

रात दिन है हिन्द का मुझ को तसब्वर होगया ॥

एक दो शिकवे अगर हों तो सुना भी दू तुम्हें ।

इस जगह तो शिकवर्षोंसे एक दफतर होगया ॥

हिन्द की यहबूद की तदबीर हू में सोचता ।

एक तरहका सक्ता तारी है यह दिल पर होगया ॥

नाले सुन के मेरे मुँह भी कब्र में जी उठे ।

फिर कहा कि है वषा क्या यह महशर होगया ॥

बर्स गर्दू ने भी हमसे बदले गिनर कर लिये ।

बन्दा परवर जो कभी था जुबम पर घर होगया

'विशाक' अपनी जिन्दगी मुमकिन कहेँ हम किसतरह ।

जबकि, तबता, दुर्व पे है, अपना बिस्तर होगया ॥

प्रभो गरदिश में क्यों है आजकल तकदीर भारत की?

प्रभो गरदिश में क्यों है आजकल तकदीर, भारतकी ?

कि वन धन कर चिगडती है हर एक तकदीर भारतकी ।
हरोगे कौन दिन हे क्यामय ! पीर भारतकी ।

बधावेगो न क्या भगवान कभी तुम धीरभारतकी ?
बतावो तो सही हम को कोई तकसीर भारतकी ।

खधर तक भी नहीं लेते कभी दिलगीर भारतकी ॥
हुई है दुर्दशा हे नाथ क्या गम्भीर भारत की ।

नजर कुछ और ही आती है अत्र तस्वीर भारतकी ॥
मिन्नाई खाक जो हमन यह तौकीर भारत की ।

यह आख कय तलक देखंगी यह तहकीर भारतकी ॥
रहे दिल पर सदा दिनकर खिची तस्वीर भारतकी ।

रह कानो में हर वम गू जती तकसीर भारतकी ॥
नया शिवालय

सच कहूं ऐ ब्राह्मण गरते घुरा न माने ।
अतिरे सनम कहीं के हुते होगयो पुराने ॥

अपना से चैरे रखना तू मे हुतो सों सीका ।
जंगो जदल सिबाया घायज को भी खुदाने ॥

तग आके मैने आखिर देरो हरम को छोडा ।

वायज का वाज छोडा छोडे तेरे फसाने ॥

कुछ फिक्र फूट की कर माली है तू चमन का ।

बूटों को फू कडाला इस विषभरी हवा ने ॥

पत्थर की मूरतों में समझा है तू खुदा है ।

याके वतन का मुझ को हर जरा देवता है ॥

आमिल के गेरियत के पर्दों को फिर उठाएँ ।

बिछड़ों को फिर मिलादे नकशे हुई मिटादे ॥

सोती पडी हुई है मुहत से जी की हस्ती ।

आ यक नया शिवाला फिर देश में बनादे ।

दुनिया की तीर्थों से ऊचा हो अपना तीर्थ ।

दामाने आस्मा से उसका कनश मिलादे ॥

फिर एक अनूप ऐसी सोने की मूरती हो ।

इस हरिद्वार दिल में लाकर जिसे मिठादे ॥

सुन्दर हो उसकी सूरत छवि उसकी मोहनी हो ।

इस देवता से मांगे जो दिल की हो मुरादे ॥

जुन्नार हो गले में तमशीह हाथ में हो ।

यानी सनम कदे में शाने हरम दिखादे ॥

पहलू को घीर डालें दर्शन हो आम इसका ।

हर आत्मा को गोया एक आगसी लगा दे ॥

आंखा की हीजो गंगा, ले ले के, उसका पानी ।

इस देवता के आगे एक नहर सी चला दें ॥
हिन्दूस्तान लिख दें माथे पे इस सनम के ।

भूले हुये तराने दुनियाँ को फिर सुना दें ॥
हर सुबह उठ के गायें मन्त्र वह मोठे २ ।

सारे पुजारियों को मय प्रोत की पिला दें ॥
मन्दिर में हो बुलाना जिस दम पुजारियों का ।

आवाजये अजां को नाकौस में छिपा दें ।
अग्नी है वह जो निर्गुण कहते हैं प्रोत जिसको ।

धर्मों की यह बखेडे इस आग में जला दें ॥
है रीत आशकों के तन मन निसार करना ।

रोना सितम उठाना और इनको प्यार करना ॥

नया काव्या

ये शेख गौर करके सुनले मेरे तराने ।

ईमान की कहेँगा तू माने या न माने
की बैरकी मजूमत तूने सना हरम की ।

क्या मुन्सफी सिखाई तुझको तेरे खुदाने ॥
उलफत, यमानगत का वाजिब था वाज़ तुझको ।

उल्टा लगा यहाँ तू जंगो जदल सिखाने ॥
दूरो परी के किस्से हैं मिट चुके जहा से ।

अफसाने देवताओं के हो गये पुराने ॥

कायेकी सरजमी में कहता है तू खुदा है।

आँखों से दूरे में भी तू देख ले कि क्या है।

आ मजहबोंके एक दम भगडे सभी मिटा दें।

आ दिल से इस्लामजाँके कैरो हरम मिटादे ॥

हायल है मुद्दतों से हम में दिली कुदूरत।

आ मिल के बीच में से दीवार यह हटादे ॥

सुन्सान हो रहा है असें से दिल का मैदा।

आ एक काबा तो इस दशत में बना दें ॥

फिर एक अजीब ऐसा उम्दा हो सग हिन्दी।

दीवार में हरम के लाकर जिसे लगादे ॥

दीवारो दर पे उसके हों एक दिलो के कुनवे।

उलफत यगानगत की गुलकारिया करादे ॥

करके चिराग रोशन फिर इच्छाद का हम।

जघत से यद के दिल के काबे को जगमगा दें ॥

लिखवा के आवे जर से आयते हुन्ध कौमी।

जुं दोज एक पर्दा ऊपर से हम गिरादे ॥

हरबाष हो निराला महराब हो अनोखी।

दुनिया से एक अनोखा नकशा यहाँ जमा दें ॥

हो जुम्ब, खुरका सोफा, पोशिश ब्राह्मणों की।

माथे पे हाजियोंके, केसर तिलक लगादे ॥

पदवाये कलमा उन से हिन्दूस्तों का अब्बल।

फिर बन्देमात्रम् की आयत उन्हें सिखा दें ॥
मकसूद हो बुलाना जिस घक हाजियों को ।

नाकौस कौमयत का खुश होके हम बजा दें ॥
दे २ के मुंह पे आये हुये घतन की छोटें ।

खयाबीदगान गफलत को पे फलक जगा दें ॥
हिन्दूस्तां से हमको लाजिम है प्यार करना ।

कुर्यान जान इस पे परवाना धार करना ॥

रहेगा इस तरह पावनन्द ऐ हिन्दूस्ता
कब तक ?

रहेगा इस तरह पावनन्द ऐ हिन्दूस्तां कब तक ?

सहेगा सख्तियों पे सख्तियां पे सखन जा कब तक ?
तुझे मुहंत हुई आगोश गफलत में पंडे सोते ।

जरा बंदारहो आखिरको यह खवायेगर कब तक ?
जमाना बढ़चला राहे तरककी में अगर तेरी ।

वह रफतारे वेढंगी रहेगा मेहरबां कब तक ?
तुझे लाजिम है उठकर अत्र खबर कुछ अपने घर की ले ।

रहे कोई तेरे गल्ले का बतला पाहबां कब तक ?
बस जब हद् हो चुकी कहदे तू यह फरमा रवाओं से ।

कोई भेले यहउनकी आय दिन की सख्तियां कब तक ?
मगर खामोश पे "हमदम" बडा नाजुक जमाना है ।

रहेगा देखिये इस हालपे, खौरे जमां कब तक ?

अर्ज होल ।

हिन्दू घानो ख्वाश से यदार होना चाहिये ।

छोड कर मुर्दा बिली होशियार होना चाहिये ॥
सनअतो हिरफन का अब बाजार ठडा है पडा ।

गर्म फिर से इस जगह बाजार होना चाहिये ॥
रन्जो गम न पास आने पायें अहले हिन्दू के ।

यास का हलका यहा मिश्रार होना चाहिये ॥
खिदमते कोमो मुल्क से होये यस अपनो गुर्ज ।

न कि हम को मुफसदो गर्हार होना चाहिये ॥
आशनाई हो सदाकिन से मुल्क और काम का ।

रास्ती का सच्चे दिल से यार होना चाहिये ॥
ताकि सोजे दिल मेरा मालूम हो लोगों को भी ।

'विशक' की मरकद पे एक चिनार होना चाहिये ।
गफलत की नीद छोड़े हिन्दूस्तान वाले !

सुस्ती का जाल तोड़ो हिन्दूस्तान वाले ।
सर काहली का फोडो हिन्दूस्तान वाले ॥

चस्ता से रिश्ता जोड़ो हिन्दूस्तान वाले ।
कोशिश से मुह न मोडो हिन्दूस्तान वाले !!

गफलत की नीद छोड़ो हिन्दूस्तान वाले !!
यक्त सहर है दुनिया खुशियाँ मनी रही है ।

शाखि शजर पर बुलबुल भी गीत गारही है ॥
क्या भीनी २ खुशू गुलशन से आरही है ।

देखो सया चमन में क्या गुल खिला रही है ॥
गफलत की नींद छोड़ो हिन्दूस्तान वालो ॥
शयनम नहीं बिरादर कतरे जो यह बहे हैं ।
हालत पे हिन्दके गुल आसू बहा रहे हैं ॥

गुन्वा की आहो जारी है कथ यह कहकहे हैं ।
अलफाज बुलबुलो ने नालों में यह कहे हैं ।

गफलत की नींद छोड़ो हिन्दुस्तान वालो ॥
महदी अली से मुहसन तुम को जगा रहे है ।
नौरोजी बनर्जी शाने हिला रहे हैं ॥
घोश और माटवीय जी जीना सिखा रहे हैं ।

बाल और लाजपत भी तुम को उठा रहे हैं ॥
गफलत की नींद छोड़ो हिन्दूस्तान वालो ॥
यौरुप के साहिबे फन तुम को बुला रहे हैं ।

इङ्गलिश फूँच जर्मन तुमको बुला रहे हैं ॥
हुनर के मखजन तुम को बुला रहे हैं ।
जाओ कि माल और धन तुमको बुला रहे
गफलत की नींद छोड़ो हिन्दूस्तान वालो ॥
गफलत से हिन्द, वालो हालत यह
ओलाह है कि सूखे टुकड़ों को रो रही है ॥

फाका कशी के हाथों यह जान खोरही है ।

यथा सोरहे तुम भी किस्मत जो सा रही है ॥

गफलत की नींद छोड़ो हिन्दूस्तान वालो ॥

गफलत में मालो जर क्या इज्जत भी जा चुकी है ।

शोहरत भी मिट गई है अजमत भी जा चुकी है ॥

हिकमत चली गई हे हिम्मत भी जा चुकी है ।

हिरफत कहा है याकी सनश्चत भी जा चुकी है ॥

गफलत की नींद छोड़ो हिन्दूस्तान वालो ॥

छाड़ो यह विलकी पस्ती गफलत की नींद छोड़ो ।

हे गर ख्याल हस्ती गफलत की नींद छोड़ो ॥

वेदारी अब है सुस्ती गफलत की नींद छोड़ो ।

कषतक रहेगी मस्ती गफलत की नींद छोड़ो ॥

गफलत की नींद छोड़ो हिन्दूस्तान वालो ॥

सूटा है गफलतों ने हिन्दूस्ता तुम्हारा ।

सहरा सा बन गया है रयके जिना तुम्हारा ॥

वरबाद होरहा है यह गुलिस्ता तुम्हारा ।

मिटने को है जहा से नामो निशा तुम्हारा ॥

गफलत की नींद छोड़ो हिन्दूस्तान वालो ॥

अथ इमत्याजे मजहब पे दोस्तो भुलायो ।

नकशे हुई का दिलसे नामो निशा मिटाओ ॥

गफलत से पड़गये है जो परदे उन्हे ढटाओ ।

फिर एकबार होके शीरो शकर दिखादो ॥

गफलत की नींद छोडो हिन्दुस्तान वालो ॥

गुल्ची तुम्हारे अहले ईजाद होरहे हे ।

शागिद थे फलक जो उस्ताद होरहे हैं ॥

जापानो चीन वाले सब शाद होरहे हैं ।

कैदो गमो अलम से आजाद होरहे हैं ॥

गफलत की नींद छोडो हिन्दुस्तान वालो ॥

यादे वतन

सख्तियां पे फलक पीर बहुत भेल चुके ।

खेल जो तुम्ह को खिलाने थे वह सब खेल चुके ॥

कैदो पावन्दी में हम काट बहुत जेल चुके ।

खेलने वाले भी पापड हैं बहुत बेल चुके ॥

लापो सदमे सहे आचारा ओ बरनाद रहे ।

नीमा बहशी रहे नादा रहे नाशाद रहे ॥

गरदिशे उरत ने क्या क्या न दिखाये सदमे ।

निन नये दाम में फस कर हैं उठाये सदमे ॥

राहतें हमने धी पर बदले में पाये सदमे ।

कदर की हमने कलेजे से लगाये सदमे ॥

चहचहाते रहे फरियादो फुगा के बदले ।

मौसिमे गुल ही समझ रफखो खिजां के बदले ॥

बाग ज़रन से भी पुर लुफ चमन अपना है ।

खिल्ल अपना है यह गुन जारे घनन अपना है ॥
हमपर अर्थ मोमल्ला यह अदन अपना है ।

जान अपनी है यही ओर यही तन अपना है ॥
गैर मुमकिन है कि हम अपना घतन भूलसकें ।
और गैर भूलें तो मुमकिन नहीं फलफूज सकें ॥
शाद हों किस तरह जय तक कि वतन शाद न हो ।

कैसे आजाद हों जब तक कि वतन आजाद न हो ॥
या खुदा इस तरह कोई कहीं बरबाद न हो ।

अपनी अजमत भी गुजश्ता वह जिसे याद न हो ॥
ढाल नैरों जहाँ आँखों में यू धून गये ।

सूझ हमको न पडी अपना घतन भूल गये ॥
शुक सद शुक कि गुलशन में बहार आई है ।

एक नये ढब से हुई फिर चमन आरार है ॥
बात फिर तह की बडी फिक से यह पार है ।

माहब दोश है जो कोम का सौदार है ॥
सर वह सर हो नहीं जिस में नहीं सौदाये घतन ।
दिल वह दिल ही नहीं जिसमें कि नहीं जाये वतन ॥
हमने आलम में तमद्दुन की बिना रक्की है ।

कोई ईजाद किसी से न लुया रक्की है ॥
बात कोई न भलाई की उठा रक्की है ।

बलफते गैर भा भाई से सिवा रफखी है ॥

हुकमरा हम रहे दुनियां में कि महकूम रहे ।

एक दिलावर रहे; सच्चे रहे मासूम रहे ॥

होश फिर हमने सभाला सभलने के लिये ।

कमर बस्ता नये दौर में चलने के लिये ॥

पैर आगे नहीं रखे गये टलने के लिये ।

दिल में रेचैन थे अरमान निकलने के लिये ॥

माल अपना रहे कायू में हो दौलत अपनी ।

है बदन अपना तो इस में हो हुकूमत अपनी ॥

आलम हो रगे वफा जोरे वफा के बदले ।

दिल में तसकोन हो फिर हिंस वो हवा के बदले ॥

हम पिये आवे वफा जोमे फना के बदले ।

ताज का साया रहे जल्ले हुमा के बदले ॥

रात दिन कौम की खिदमत करे दिलशाद रहे ।

इस गुलामी के गमो रज से आजाद रहे ॥

कौम के हाथों में जो कौम की तालीम रहे ।

सब के हक यकसा रहे हकी की वह तकलीम रहे ॥

कायदे वह हो नफिर हाजते तरमीम रहे ।

हो न तहसीन तास्सुब से वह न तरमीम रहे ॥

कुछ नहथे न हो और कुछ लिये इथियार नहो ।

एक स खुश नहो और एक स बेजार नहो ॥

फर्ज अपना है यही हम न चतन को भूल ।

शर्म की जा है जो अगलों के चलन को भूल ।
अब हम भरे के लिये इलम को फन को भूलें ।

है तंभ्राजुव जो चमन जाद चमन को भूले ॥

मुल्क के वांस्तें हो जोशे मोह्व्यत हम में ।

जान भी जायेतो बस लाये घनन के गम में ॥

शैदाये वतन

हम भी दिल रखते हे सीन में जिगर रखते हैं ।

इशको सांदाये वतन रखते हे सर रखते ह ॥

माना न जोर ही रखते हैं न वार रखते हैं ।

बलबल' चोग की माह्व्यत फा मगर रखते हैं ॥

किगुरा अर्थ का आर्धों से हिला सकते हैं ।

खाक में गु वदे रदू को मिला सकते हैं ॥

शौक जिनको है सताने का सत्रायें आयें ॥

दूयदू प्राके हों, यू न मु ह छिपायें आयें ॥

देख लें मेरा चफा आयें, जफायें आयें ।

दौडकर लू गा घलाये में घलायें आयें ॥

दिल बह दिल ही नहीं जिन में कि मरा दर्द नह ।

सपतियों सत्र से भेले न जी घर्द मर्द न ही ॥

केस हैं पर किसी लैला के गिरफ्तार नहीं ।

काहकन है, किसी शीरी से सरोकार नहीं ॥
 ऐसी बातों से हमें उन्स नहीं प्यार नहीं ।

हिज्र के वस्ल के किससे हमें दरकार नहीं ॥
 जान है उसकी पला जिससे यह तन अपना है ।
 दिल हमारा है बस उसमें बतन अपना है ॥
 यह वह गुल है कि गुलों का बकार इससे है ।

चमने दहर में एक ताजा बहार इससे है ॥
 बुल बुले दिल को तसल्ली धो करार इससे है ।
 बन रहा गुलची के नजरो में यह खार इससे है ॥
 चर्ख कज रफ्तार के हाथों से घुरा हाल न हो ।
 यह शिगुफता रहें हर दम कभी पामाज न हो ॥
 आर्जू है कि उसे चश्म से जरमे सीचें ।

बन पड़े गर तो उसे आवे गुहर से सीचें ॥
 आवे हैवा न मिले दीदये तरमे सीचें ।

आपड़े वक्त तो बस खूने जिगर से सीचें ॥
 हड्डिया रिजके हुमा बन के न घरवाद रहें ॥
 बुल के मिट्टी में मिले खाद घने याद रहें ॥
 हम सितम लाक सहें शायके बेगार रहें ।

आहे थामे, नूये रुके हुये फरियाद रहें ॥
 हम रहें या न रहें ऐसे रहें याद रहें ।

इसकी परवाह है किसे शाद कि नाशाद रहें ॥

हम उजड़ते हैं तो उजड़े चतन आज्ञाद रहे ।
हों गिरिफकार तो शों पर वनन आशाद रहे ॥

फरियाद भारत

कश्तिये हिन्द की तूफाँ से बचाये कोई

गैर सुरत हे मेरी देखने आये कोई ।

कौन है ? किससये गम किस को सुनाये कोई ॥

कहती है रोके हर एक से यह भारत माता ।

मुझको कमजोर समझ के न, सताये कोई ॥

दूध बचपन में सपूतों को पिलाये मैंने ।

अब बुढ़ापे में दवा मुझको पिलाये कोई ॥

लोफ ऐसा है कि चलने में गिरी जाती है ।

दोनों हाथों से मुझे आके उठाये कोई ॥

मैंने बिगड़ी हुई किस्मत को बनाया सध की ।

मेरी बिगड़ी हुई तकदीर बनाये कोई ॥

गर्क यह बहरे हवाबिस से न हो जाये कहीं ।

कश्तिये हिन्द की तूफाँ से बचाये कोई ॥

यह जमाने की है खूबी यह मुकद्दर की है बात ।

चैन से सोये कोई चैन न पाये कोई ॥

नाज बचपन में, उठाये हैं हर एक के मैंने ।

अब जईफो में मेरा वार उठाये कोई ॥
 खावे गुफलत में पडे सोते हैं सब अहले घतन ।
 होश में लाये कोई इन को जगाये कोई ॥

दुनिया की कुफलतो से छोड़ूँ न देश सेवा

ईश्वर मैं देश सेवक समार में कहाऊँ ।

प्यारि स्वदेश पर मे बलिदान हो हो जाऊँ ॥

सिर पर हिमालया है चरयो में है समन्दर ।

भागारथी सी पशारी नदिया कहाँ मैं पाऊँ ॥

दुनिया की कुफलतो से छोड़ूँ न देश सेवा ॥

सर पर अजल पढी हो, प्रिय देश देश गाऊँ ॥

जिस आँवो गिल का पुतला उस गिल के काम आऊँ ।

मर कर भी हो तमन्ना भारत में नाम पाऊँ ॥

दैरो हरम को भगडा भारत से मैं मिटाऊँ ।

प्रायाग बन के दिल में गंगा यमुन मिलाऊँ ॥

गर मुझ से पूछे कोई नामो निशान मेरा ।

हिन्दू कहूँ न मुस्लिम मैं भारती बताऊँ ॥

नफरत से मुझ को नफरत हो जाये अब खुदारा ।

छोटा बडो भुलाऊँ सब को गले लगाऊँ ॥

सैराय फिर से करदूँ उजडे हुये चमन को ।

चश्मों से अपने चश्मा मैं प्रेम का बहोऊँ ॥

मेरी जिन्दगी का मकसद कुछ होता बस, यही हो ।

बरतानिया के साये में पूरण स्वराज्य पाऊ ॥

मुझ धुल धुले बतन को लेजाये गर कफ म मैं ।

गुलशन का अपने दिलकश नगमा बहा सुनाऊँ ॥

सारे जहाँ को तेरा शौदा बनाऊ 'शादा' ।

म राग तेरा भारत कुछ ऐसी लय में गाऊ-॥

दिलो उमग

अगर जिन्दा रहता तो दुनिया को दिखादूंगा ।

कि किस का नाम है दुब्ये, घतन सब को सिखा दूंगा ॥

न बिलकुल पातिसी से काम लेन का हूँ मैं कायल ।

यह मकारी है हर एक खानिये दिल से मिटा दूंगा ॥

खुशामद मैं कभी सीखा नहीं इन्सान की करना ।

सिदाकत पराविला शक हा मगरसिर को कटा दूंगा ॥

खुशामद उनको भाती है जिन्हें है सर्वथा मतलब ।

सरासर है कमीना वन यह मैं, उनको जितादूंगा ॥

चमन जो कौम का अपने है मुरझाया हुआ बिलकुल ।

मैं उसको चश्मतर से सींच कर गुलशन बनादूंगा ॥

मेरा गर नाम चाहे कोई भी, तहरीर में लाना ।

मैं एक कोमी दीवाना हूँ, यह नाम अपना लिखादूंगा ॥

एक कौम परस्त की ख्वाहिश ।

कयतक हरा भरी फिर अपना घतन न होगा ।

हिन्दुस्तान कभी क्यों रश्के चमन न होगा ?
भारत में लाल पेसे पैदा हुये हों जिनसे ।

कीमत में बँढके कोई लाले यमन न होगा ॥

होंगे हजारों पैदा दुनियाँ में लोग खुशगू ।

गोपाल कृष्ण सां पर शीरी संखुन न होगा ॥

दुनियाँ के दुःख भेले पर राम को न छोडा ।

भारि का भक्त कोई मिरले लखन न होगा ॥

उस वक्त तक न छोडें दाम वैकसी से ।

जब तक कि भारतियों का एक मन न होगा ॥

तरानये इत्तहाद

जगत की दीद से है दिल शावमां हमार ।

शुके खुदा वतन है हिन्दुस्तान हमार ॥

रौशन है जौहरी पर मोती की कदरो कीमत ।

तारीख़ दाने आलम है कदरदां हमारो ॥

कहते हैं हम को हिन्दी बुब्बे वतन है ईमा ।

क्या पूछते हो दीनों नामो निशां हमार ॥

आलाम मुसलमां पे चोले तडप के हिन्दू ।

सूदो जया है उनका सूदो जया हमार ॥

देखा है हम को मिल्के गंगो यमन की सूरत ।

शादाब होके हसता है मुलिस्तो हमार ॥

होजाये कांश सावित कहीं की कुर्चा गरदी ।

धन जाय काश गाधी हर नोजवा हमार ॥

काफी है तल्लो फोक दुनियां के फूँकने को ।

नारे अलम हमारी दर्दे फुगों हमारो ॥

जां से बदन से खू से हिन्दूस्ता के हैं हम ।

हरत है क्यों नहीं है हिन्दूस्ता हमारो ॥

बदशत से होंगे औंधे सारे जहा के भड्डे ।

दोगा यलन्द जिस वक्त मुल्की निशा हमारो ॥

कोहे गरां भुक्केंगे यहरे रवा रुकेंगे ।

अच्छा हो हो न जाहिर जोशे निहां हमारो ॥

दूटेगा कुल तिलिस्म अग्यारिये अजाबत ।

अच्छा है गर न दूटे कुफले वहां हमारो ॥

रोजे धफा से होंगे हम कामरा यकीनन ।

आदिल है कैजे गुस्तर है हुक्मरा हमारो ॥

फरियाद भारत

कहाँ है, बह मेरा, दम, खम, कहा ताये तवा, मेरी ।

गनीमत है जो बाकी है बदन में हड्डियां, मेरी ॥

उदू, ताजीम सम करते थे, अपना सिर मेरे आगे ।

शहशाहे जहा तक चूमते थे आस्ता मेरी ॥

बजा, था हर, तरफ, दुनिया में डका मेरी ताकत का ।

चमकती थी जमाने में कभी तेगे सिना मेरी ॥
निगहवां धर्म था, मेरा जवां वेदों की बानी थी ।

वफा थी राजशां मेरी, हुई थी पास्वां मेरी ॥
गया वह दौर, दौरा दौरये घुसने जंबु आया ।

उडा दीं, गरदिशे, पीरे, फूलक ने धजिया मेरी ॥
नहीं अपना रहा कुल, पास मेरे सब है गैरों का ।

गिजा मेरी मेरा फैशन चमन मेरा जवां मेरी ॥
फफोले दिल में पडते हे कुलस्ती है जवां मेरी ।
अजब किस्मा है अपना निराली हे दास्तां मेरी ॥

॥ (७४) ॥
क्या करूँ ?

रोती है दिन रात, अपनी चश्म तर को क्या करूँ ?

एक नया सौदा समाया हाय सिरको, क्या करूँ ?
पाब से बइतर समझती है मुझे दुनियां अगर ॥

धन्दा परघर "ए साहिब" या कि "सर" को क्या करूँ ?
हे जहां तजलील अपनी और दुत ० की सदा ।

आप ही बतलाइये फिर कब उधर को क्या करूँ ?
गरमिली इजते न दुनियां में तो फिर किम कामें के ।

कोई बतलाये कि मैं इस जोरोजर को क्या करूँ ?
चापलूसी करते गुजरी हे यह सारी जिन्दगी ।
हे दिखावा ही फकत इस करों फरें को क्या करूँ ?

चैन पाता ही नहीं पाता, नहीं जब तक कि स्वराज ।

हाय दिल को क्या करू अपने जिगर को क्या करूँ ?

॥ तेरो नये 'इत्तहाद'

चरचा है हिन्दू वाले बेदार हो गये हैं ।

मुद्दत के बाद गाफिल होशियार हो गये हैं ॥

हर एक के दिल में भरगशा है जोशे घतन परस्ती ।

सब मुल्क को भद्र को तय्यार हो गये हैं ॥

हिन्दू स्त्रियों को कौम-आप में मिल रही है ।

फिर यह दिली के पैदा आसार हो गये हैं ॥

'यह हिन्दू और मुसलमानों जो कल जुड़ा रहे ।

आज एक दूसरे के गमरे गौर हो गये हैं ॥

दोनों योगीन गते के नारे लगा रहे हैं ।

दोनों मुगायत से बेजार हो गये हैं ॥

क्या शेख क्या ब्राह्मण क्या मौलवी मोलाला

सब एक ही नशे में सर शार हो गये हैं ॥

सद शुक्र भोई र शीरो शकर बने हैं ।

बिछड़े हुये मिले हैं बंटे हुये मते हैं ॥

शाबाश हिन्दू वालों उलफत बढ़ाये जावों ।

परदा जो देमिया है उसको उठाये जावों ॥

इस इत्तहाद में है अजमत का राज बिन्हा ॥

इस राज को समझ लो रजिजश मिटाये जावो ॥
 "गर हिन्द आस्मा है तुम उसके हो सितारे ।

पहलू व पहलू अपना जलवा दिखाये जावो ॥
 हम हिन्दू और मुसलमा एक दिल हैं एक जा हैं ।
 यह दिल फरेंव नगमा हर वक्त गाये जावो ॥
 कोशिश करो कि दुनिया इज्जत करे तुम्हारी ।

खुलके खुदा के दिल पे सफका जमाये जावो ॥
 हिम्मत के काम करके आलम को द्रग करदो ।
 सारे जहाँ में अपना डका बजाये जावो ॥
 अल्लाह करे मुबारिक यह इत्तिहाद तुम्को !
 हासिल हो जतूद अपने दिल की मुराद तुम्को ॥

शहीद कौम

वह शहीद तेगे, जफा हूँ मैं जिसे आस्मा ने मिटा दिया ।
 मेरे मुह से निकली न आह तक मुझे गोलियोसे उड़ा दिया ॥
 वह बहार खून की, नदिया कि पुकारा अश भी अल अमा ।
 वह पलट पलटके सितम कये कि, "हलाकू खा"को भुला दिया
 हमी जानिसार हैं हिन्द के हमी दिलफिगार, हैं हिन्द के ।
 हमे पास मेहरो घफा का है उन्हें जादे के दिखा दिया ॥
 कोई बैठकर न संभल सका कोई दौड कर न उछल सका ।
 वह सपूत पाठे जवान ये तहे खाक जिनको मिला दिया ॥
 कोई कुशता कुशते पे बेरुफन कोई लोट पोटे था अस्तातन ।

जो किसीमें बाकी रमक भा थी तो पलटके चर्का लगा दिया ॥
 भला कौन करता था हक रसी कि सिरहाने रोती थी वेकसी
 जिसे चाहा उसको दगा दिया जिसे चाहा उसको जला दिया ॥
 न सुनी किसी की शिकायतें बयान करते किससे हिकायतें ।
 की जो हिन्दुवालों ने चूत्रिरा उन्हें मार्शलला सुना दिया ॥
 वही लोग नाज में थे पले जो गला में पेट के बल चले ।
 पडो मार कोडों की इस कदर कि तमाम जिन्म सुजा दिया ॥
 वह यतीम करते हैं जारियां कि नसीब जिन को हैं शरारियां ॥
 वह घरों गती हैं नारियां जिन्हें हाथ । वेवा बना दिया ॥
 यहां सबको जान का योम है वहा मानटेगू स्कीम है ।
 न तो सब है न करार है यह बतानो तो हमे क्या दिया ॥
 उन्हें यादरखना "खलीक" तुमकमी दिलसे करना व इनकोकम
 यह शहीद कौम के लाले है जिन्हें हकने इतना बढा दिया ॥
 होम, रूलो मर्ज के ऐ सोज बीमारों मे हूँ

कौन कहता है कि मुफसद हूँ मैं गहारों में हूँ ।

शाकर्मों बन्दा खुदा का हूँ खुश शेर में हूँ ॥

है वतन अपने की उलफन, दिखी जिगर में परमगर ।

साथ ही मैं शाह अपने के बका वारों में हूँ ॥

हूँ सताया उलफते हुबे वतन का ए शही !

घरना मैं बागी हूँ मुफसद हूँ न गहारों में हूँ ॥

खुद पैरस्ताने जहाँ की आँख का शहनौर हूँ ।

११ ' ' इन सितमंजर बेवफाओं के मैं बीमारों में हूँ ॥

चाँहता हूँ दिल से तेरा दीदार हा मुझको नसीब ।

१२ ' ' पर मेरी किस्मत यह कहती है कि लाचारी में हूँ ॥

हूँ शहशाह दिल का अपनी कुल जहाँ जागीर है ।

१३ ' ' देखने वालों की नजरों से मैं नादारों में हूँ ॥

हरतिरह से खुश हूँ मैं आजाद और बेफिक हूँ ।

होमकली मर्ज के ए सोज बीमारों में हूँ ॥

हेच है सब नियामते हासिल गर आजादी

नहो-

सिर नगू था फलें गूम से कल करावे शाम में ।

१४ ' ' कर रहा था शिकवये बेमहरिये अय्याम् में ॥

उड़ती इस आलम में एक चिड़िया नजर आई मुझे ।

१५ ' ' दिलस उसके उड़ने फरने की अदा भाई मुझे ॥

उड़ती फिरती थी हवा में वह अजीब अन्दाज से ।

१६ ' ' दृशान आजादी अर्था थी शोलिये परवाज से ॥

करती फिरती थी तलाशे आवो दीना डार हूँ ।

१७ ' ' उड़ती फिरती थी उसीकी जुस्त जू में को बकू ॥

आन बैठी इस तरह आखिर यकायक मेरे पास ।

१८ ' ' रंजी नाकामों से हो जैसे किसी का दिल उदास ॥

मैंने पूर्ण उससे तू अफसुर्दा दिल है किस लिये ।

ऐसी गमगी और इतनी मुज्मदिल है किस लिये ॥

मुस्तलाये रज्ज चक्के चासो हिरमा क्यों है तू ॥

यों तलाशें अधिदाने में परेशा क्यों है तू ॥

ऐसे पास आजा नेरी सुरत मुझे मंगूव है ॥

मैं बहम कर दूंगा जो कुछ भी तुझे मतलूब है ॥

दिल कुशा पिजरा तरे रहने को बनवाऊंगा मैं ॥

तुम्हको जितनी नियामतें देरकार है लौकंगा मैं ॥

चोगा प्रपने हाथ से श्यामो सदर दूगो तुम्हें ।

फिर आयो दाग से आजाद कर दूंगा तुम्हें ॥

होगा तरे चह चाने से बहुत महजुज मैं ॥

तुम्हको रखूंगा मलाल देहर से महजुज मैं ॥

कहके ये मैंने घड़ोवा हाथ जब उलकी तरफ ॥

उड़ गई भिड़ देखकर उफरत से चह मेरी तरफ ॥

यह थी नफरत देखीत आमेज और या मतलय इसका यह—

हच है सब नियामतें हासिल गर आजादी नहीं ॥

पॉलिटिकल कैदियों के दिलों अज वात

खु होश के मूज कटंगे चक्की चलायंगे ।

बिल्कुल कुशा पराश खुशी से मिटायंगे ॥

जन्दा की कठची रोटिया खुश ही के खायंगे ।

और अध मुने चने भी खुशी से चवायंगे ॥

दर्दों महन में फस के न गरदन झुकायेंगे ।

सूखों पे ताव देंगे अकड़, भी दिखायेंगे ॥

रोयेंगे घुजदिली से न आसू वहायेंगे ।

इस रंजो बेयानी में भी हिम्मत दिखायेंगे ।

रंजो गमों अलम में भी खुशियां मनायेंगे ।

सखनी तमाम, भेलेंगे कड़ियां उठायेंगे ॥

खुद सह के जुल्म, जुल्म की हस्ती मिटायेंगे ।

भारत की हाल जार को बेहतर बनायेंगे ॥

तरानये मोहव्यत

तसुहक मुल्क पर हो कौम पर अपनी फिदा हो जा
नहीं है वक्ते रोहत जाग और जल्दी खड़ा होजा ।

हमा तन महवअज बहरे हुसूले मुइमा होजा ॥
अगर खाहिश है तेरा नाम हो सफहाय मर्दों में ।

तसुहक मुल्क पर हो कौम पर अपनी फिदा होजा,
मटा हफे गलत की तरह तू सोने से नाचाका ।

न रख आपस में बैर और मिस्ले आरना सफा होजा,
भुला दे शिकवये देरीना मिल मुइत से बिछड़ों को ।

मदावा बन किसी के दर्द का दर्द आशना होजा ॥
इलाजे दर्द दिल हम दर्दा अलवा में मुजमर है ।

संरापा दर्द बन फिर सबके दर्दों की दवा होजा ।

तमना है अगर कुछ गोइरे मकसूद हासिल हो ।

फलाहे मुल्क पर कुर्बान होजा और फना हो जा ॥

पकड़ सब धार इस्फलाल से शमा हिदायत को ।

अधेरी रातका कुञ्ज गम न खा तू रहनुमा हाजा ॥

बदल करनट जरा तू भी जमाना सारा बदला है ।

तमाहुन छोड़ दे और तू भी आतिश जेगपा होजा ॥

बना से धन सबे जो कुछ ही है दौरे जदीद आया ।

खालाते कुहन को छोड़ दे तू भी नया होजा ॥

न हो हिन्दू को मुसलिम से न मुसलिम को हिन्दू से ।

कुदुरत छोड़ दे वह भी धर तू भी सफा हो जा ॥

न तेरे कान हरगिल आशना हों फर्क मिल्लन से ।

कमर बस्ता बराय विदमते अहले, सफा होजा ॥

मुसलमां है तो तू कशका लगा माथे पे चन्दन का ।

ब्राह्मण से शिवाले में, तू जाकर हम नवा होजा ॥

ब्राह्मण है तो ना ममीजद में जाकर जग्गी साई कर ।

मुसलमानो से हम आहम तू बहरे दुआ होजा ॥

मुकामे शर्म है गैरों के दर पर हो तू लफतादा ।

सलाहीत यह ले खुद अपनी बातों पर खडा होजा ॥

तुम्हे यह तो खबर है एक दिन आखिर को मरना है ।

किसी के सिर पे चढ़ के मर किसी पर तू फिदा होजा ॥

धर गाधी उधर नहकू धर दसरत उधर आजाद ।

इन्ही के नकश पा पर चल कि मिस्ले नकशे पा होजा ॥

बतन की लाजपत रखले अगर मनजूर शौकत है ।

उदू की सफ का सफ़दरे वन के यूं मुश्किल कुशा होना ।
जफ़र हासिल हो फिर दुनियां में, 'आजिज़' नाम तेरा हो ।
यही है जिन्दगानी इस तरह अन्जाम तेरा हो ॥

मेरा कसूर यह था कि मैं बे कसूर था
मैं अपने प्यारे हिन्द की उलपत में चूर था ।

अग्यार समझे दिल में कि इन से लकूर था ॥

मैं इनके वारे लुत्फ़ से बचता था हर घड़ी ।

गोज़े र धार मन्नत खवेशा जरूर था ॥

कहता था दिल की बात मैं मु ह पर, खरी खरी ।

हा किज्व और दरोग़ खुशामद से दूर था ।

जाता न था सलाम को हुक्माम बक के ।

लाता न लवपे भूले से भी जी हु जूर था ॥

देता था उनकी ईट से पत्थर से मैं जवाब ।

ग़ैरत थी मुझ में और मैं कदरे गयूर था ।

इतने पे पस हमेशा रहा मुरदे अताब ।

मेरा कसूर यह था कि मैं बेकसूर था ॥

कौमी इत्तिहाद

फखरे वतन है दोनो और दोनो मुक़तदर है ।

हैं फूल इक़ चमन के, एक नखलके समर है ।

ये कौम तेरे दुस्स के दोनो ही, चारागर है ।

दोनो जिगर २ हें लेकिन दिगर २ ह ॥

आपस के तुफुरकों से हें आह ! खरार दोनो ।

अग्यार की नजर में हें वे वकार दोनो ॥

मिल कर चलो कि आखिर दोनो हो भाई २ ।

भाई से क्या नडाई भाई से क्या घुराई ॥

एव तक यह खाना जङ्गी कब तक यह खुद सताई ।

जे था नहीं उडों को पद और खुद नुमाई ।

मिल कर गले निकालो दिल का गुगार दोनो ।

इक खाक के हो पुतले पायान कार दोनो ॥

ताचन्द यह किसाने गम हाय मुत्तसिल के ।

गै रों को क्या दिखाते हो दाग अपने दिल के ॥

आये हुये हैं पहलू में लखम आह छल के ।

हो जाय पार कशती कोशिश करो जो मिल के ॥

बरपा है शोर तूफा हो होशियाट दोनो ।

कर दो भवर से कौमी घेडे को पार दोनो ॥

रश्के जिना बनाओ हिन्दूस्ता को मिलकर ।

खूने जिगर से सींचो इस गुलसिता को मिल कर ॥

लहरावो आस्मा पर कौमी निशान मिलकर ।

दो आघेजा नसारी नेके सिना को मिलकर ॥

मैदाने लहोजहद के हो शहसवार दोनो ।

हुब्ये घतन पे कर दो दिल का निसर दोनो ॥

वतन परस्तों का शिवालायानी बागजलियांवाला

गिरा है खून यहीं कौम के शहीदों का ।

फना हुआ है यहीं दम सितम रसों का ॥

हुये है गक लहू में वतन के लाल यहीं ।

चमन हुआ मुगदों का पायमाल यहीं ॥

यहीं पडा है यहीं खेत बेगुनाहों का ।

लुटा है काफिला दिन दिहाडे वाद खवाहों का ॥

यहीं चली है गोलियां निहत्थो पर ।

कि आग बरसो है आतिश फि र्श निहत्थो पर ॥

यहां निकाले है अरमान दिल के डायर ने ।

कि भांडभून दिया बेपनाह फायर ने ॥

गिरे हैं गोलियां खाकर यहीं जवां अफमोस ।

तडप २ के हुये सदे नोमजा अफसोस ॥

यहीं की खाक से रग शफक है शरमिन्दा ।

यहीं के जरों से मेहरे-उफक है शरमिन्दा ॥

वफा शयारों पे टूटा है क्या सितम हेहात ।

यह आती है दरो दीवार से सदा दिन रात ॥

यह वह जगह है जियारत गा है इधाम है अय ।

यह वह है हिन्द में मशहुर जिसका नाम है अय ॥

यहीं की खाक ने ज़रों पे है शर्फ पाया ।

कि रग खून शहीदा है सर बकफ आया ॥

यह अय वह पहिला सा जलियांवाला बाग, नहीं

धतन परम्तों का है यह शिवाला बाग, नहीं ॥

हम आन न छोड़ेगे हां जान गंवादेगे

क्या चोज हैं हम एक दिन दुनियो को बतादेगे ।

फिर दब-बा पहिला सा आलम को दिखा देगे ॥

हा ! तोसिने हिम्मत की गर बाग उठा देगे ।

उस पार ही पहु चगे जब एउ जरा देगे ॥

बहदत के हे हम यानी जन्नत के हम हैं मालिक ।

पूछेगा कोई आकर, हम खूब सियादेगे ॥

तहजीब जमाने में फैलाई हमीं ने है ।

दावा है कि बहशी को इन्सान बना देगे ॥

यनानी हों या मिन्सरी शगिर्द हमारे है ।

बस्ताद के हक को यह क्या दिल से भुलादेगे ॥

हम चादये अफाँ को मतवाले हैं ऐ साकी !

अस्ताद को देखेंगे जब रग अमादेगे ॥

हम सुलह के जोया हैं और सबर ही शेवा है ।

बेको न हमें छेड़ो हम इशर उठा देगे ॥

क्यों प्रखर् जगता है सोते हुये फितने को ।

गर बबाब से हम चींके आलम को हिला देगे ॥

हा और अभी तरु है कामोश है हम जबतकी ॥

गर जोर पे आयेंगे तो धूम मचादेगे ॥

कब तक न हमारी इन आहों का अमर होगा ।
रोने पे गर आये तूफान उठादेंगे ॥

गो लाख मुसीबत हो इफ लास की हालत हो ।

हम आनन छोड़ेंगे हाँ जान गंवा देंगे ॥

जब कौम को देखेंगे जजबे से हुई खाली ।

नजमें तेरी जोशोली यह शायद सुना देंगे ॥

सुख था कूचा गली और सुख था बाजार भी

कौम भी जीती रहे जीते रहें अग्यार भी ।

दर्द भी कायम रहे कायम रहे बीमार भी ॥

रंजो गम आये सितम बढ़ता रहे दर्दो अलम ॥

आशिको ! गम खार होते हैं भला दिलदार भी ॥

देखले हालत हमारी इन दिनों बरतानियो ॥

स्वादिशे गम में हमारे खुभ गये ह खार भी ॥

कह रहे हैं आशिकाने हिन्दयो इङ्गलैंड से ।

काटले सिर या हमें तू यस्थ दे तलवार भी ॥

वक्त पर दी जान और ईमान तक सिद्ध का किया ।

हम लुटा बैठे हैं तेरी राह में घर बरि भी ॥

कल गिरा जो खून था उस के निशां बोकी हे आज ।

सुख था कूचा गली और सुख था बाजार भी ॥

इत्तफा के हिन्द पे नाजां नहो इतना नसीम ।

हैं यहां पे यार भी और हैं यहां अग्यार भी ॥

हिन्दियो का मौजूदा फोटु

सैदे शिकस्ता पा हैं वह हम यहाँ बश है ।

मायूमियों के नकशे जीनत दहे नजर हैं ॥

इतनी बढी हुई है अपनी भी नोहा खानी ।

नगमा सरायों से दुनिया के देखबर है ॥

जा मास है हमारा नशतर से कम नहीं है ।

फोडे बने हुये दिल पक्के हुये जिगर हैं ॥

साया में जिनको रखा वो हो बने तगर, जुन ।

महरूम बार कहिये जिनको घई हम शजर हैं ॥

मन्जूर है मुकय्यद सारे हों फहमो दानिश ।

इफलास की बशौलत मशहूर वे हुनर हैं ॥

परवाज क्या दिखायें किस तरह लब हिलायें ।

हम खानये कफस में मुगे शिकस्ता पर हैं ।

सुनता है कौन अपनी क्या दर्द दिल सुनायें ।

इकनाला नारसा है इक आहो, ये असर हैं ॥

कहते हैं अर्थ पर भी अपनी ही रोशनी है ।

कुछ काम कर दिखायें हम भी बंशरे अगर हैं ॥

वेदाद कर रहे हैं वे दाद कर रहे हैं ।

दूदे चिराग, लेकर, अब दाद गर किधर हैं ।

हर शेर तीर हमारा इक तीर है जिगर कादा ।

खन्जर भरे हैं दिल में पहल में नेशतर है ॥

हरजा सराय मां हैं अश्रुभार तेरे शैदा ।

समझेंगे नज्म तेरी जो साहिये नजर है ॥

हमवतन हैं इसलिये हिन्दू मुसलमां एक हैं

सब का खालिक एक है और सब का मालिक एक है ।

शिवाला मस्जिद और मन्दिर में खुदा सब एक है ॥

आयते कुरआन की और वेद मन्त्र यह कहें ।

चश्में वीं हक के लिये तसबीह वो माला एक हैं ॥

अहले जाहिर गो बुरा माने मेरी इस बात का ।

अहले दिल के वास्ते हिन्दू मुसलमां एक है ॥

भगडे फिर हरगिज न हों यहम रहीमो राम के ।

अब कि कुदरत एक है और उसका कादिर एक है ॥

छोड़ दो पे दोस्तो मजहबी तास्सब छोड़ दो ।

हमवतन है इसलिये हिन्दू मुसलमां एक है ॥

गंगा शुभना की तरह मिल खादो दूरे का निशान ॥

यक जहत एक दिल वायक जा हो के कह दो एक है ।

फिर से बागे वतन में वादे बहारी का हो दौर ।

बुल्ल बुले हर शजर पर गायें कि गुलशन एक है ॥

यह हुआये 'नाज' है यह चमन खुश फूले पले ।

हर जर्घा लब पे हो कि वतन अपना एक है ।

नगमय इतिहाद

आओ रिते जोड़ लें मुहत से हैं टूटे हुये

आबले तो दिल में है लेकिन हैं सब फूटे हुये ।

दिल में पहलु में मगर अफसोस सय टूटे हुये ॥
 क्या गिला भूटे रफीकों का अगर दे वह दगा ।

अक्स देते हैं कहीं भी आइने टूटे हुये ॥

खुल गई अंगवार की सारी मुल्लमा साजियां ।

जोडे जाते हैं कहीं वादों से दिल टूटे हुये ॥

अब कहा वह शानो शोकतहो गई मशरिक की गुम ।

कमर हैं घोरान सारे और चमन टूटे हुये ॥

हमने तो हक्के घफादारी अदा सब कर दिया ।

आप के वादे मगर जितने थे सब भूटे हुये ॥

होगये हिन्दू मुसलमा गैरको क्यों रशक है ।

मिल रहे हैं भाई दो मुद्दतसे थे छूटे हुये ॥

जब तक सामोश है हम जुलम करले आस्मां ।

कुछ मजा दिजलायेगे, एक दिन यह दिल टूटे हुये ॥

छोड़ दो आबस के भंगडे हो चुकी रसवाईयां ।

आओ रिश्ते जोडले मुद्दत से हे टूटे हुये ॥

पडगया नासूर दिलमें यह उठाये हैं अलम ।

रिस रहे हैं आबले, दिल के शजर टूटे हुये ॥

नेकों की पहिचान

भागमें पड कर भी सोनेकी दमक जाती नहीं ।

काट देनेसे भी हीरे की चमक जाती नहीं ॥

सिल पे-घिस देने, से-भी जाती नहीं चन्दन, की वृ ।

फूल की मिट्टी में मिलकर भी, महक जाती नहीं ॥

टूट कर आता नहीं कुछ लाल की रगत में, फर्क ।

तोड़ देने से, भी मोती की, दमक जाती नहीं ॥

रज में आता नहीं नेकों, की पेशानों पे, बल ।

धूप की तेजी से, सब्जे की लहक जाती नहीं ॥

जा नहीं सकती कटहरों में, भी शेरों की दहाड़ ।

दशत गुलबर्गों में भी गुन्बों की, चटक जाती नहीं ॥

खौफोखनरे में बदल सकती नहीं मर्दों की, रून ।

अन्दलीयों की कफस में भी चटक जाती नहीं ॥

साहबे हिस्मत नहीं देता मुखालिफ से कभी ।

जोर से आधी की आतश की भडक जाती नहीं ॥

नाराजन रहता है आफतो ह्यादिस में, लिले ।

बादलों में घिर के विजली की कडक जाती नहीं ॥

मुल्क की उलफत का जजवा दिल से मिट सकता नहीं ।

कौम की विदमते की खाहिश पे "फलक" जाती नहीं ॥

दुआ की जिये की हों, हिन्द में अब ऐसे

वशर पैदा

करेगा इस जमाने में वही दिल कुछ असर पैदा ।

बसुज कोफे खुदा जिस में न होगा कोई डर पैदा ॥

तलाशे राह में निकलो गे जब तुम मस्तह्व होकर ।

जरूरत रहनुमाई की करेगी राह बर पैदा ॥

बहम, देखे गले मिलते जा हिन्दू मुसलमां तो ।

पुशी से चश्म भारत में हुये दो अशक तर पैदा ॥

वह है कानून कुदरत का कि जब बेदाद बढ़ जाये ।

तो हो जाता है फिर कोई न कोई दाद गर पैदा ॥

खुनां चेशाह लह्ना का सितम जब बढ़ गया हव से ।

तो राजा रामचन्द्र जी हुये दशरथ घर पैदा ॥

सताया कस ने जग रहस्यत और बुजुर्गों ।

तो मथुरा में हुये थे कृष्ण विलकुल बखबर पैदा ॥

मुक्त खुपके से तरज जिन्दगी गांधी की कहती है ।

लगे ह हिन्द में देने फिर अंगले से बशर पैदा ॥

तमन्ना दीद को दीदार का मूजिय नहीं होती ।

अगर शौके तमाशा है तो कर जीके नजर पैदा ॥

यह किसने कह दिया रोते नहीं कोई शहीदों को ।

मुझे मरने तो दे, हो जायेंगे, सों नौहा गर पैदा ॥

जवां मरदों का रुतवा अहले दौलत, से फजू तर हैं ॥

बजाये सीमो जरके कीजिये दिन और जिगर पैदा ॥

गूजब है रुखा फीका खाके सांये इसके वाशिव ॥

कि हों जिस मुल्क में कसरत से घी ओर नमश कर ॥

हयाते जावदा जाने घटन पर जान देना जो ॥

हुआ कीजे कि हों अब हिन्द में, ऐसे बशर पैदा ॥

'शुबार' आराम से रहने की तुम्हकी आरजू है तो ।

अदावत दूर करो और मोहव्यत दिल में कर पैदा ॥

गर स्वराज मिल जाय

हमारे दुर्द कोई इलाज मिल जाये ।

दया हो, ऐसी कि जिस से मिजाज मिल जाये ॥

मरीले गम पे-मसीहा की अक इनायत हो ।

करे न वादा कयामत का आज मिल जाये ॥

नहीं यह चाहते हम गैर के बने हाकिम ।

नहीं हवस कि हमें तखती ताज मिल जाये ॥

बहा तो फिक है बस पेट की पड़ी हर दम ।

शिकम पुरी ही वो पूरा अनाज मिल जाये ॥

हैं सब से पीछे पडे, दौड में, तरफकी, की ।

यदों हम आगे हमें गर स्वराज मिल जाये ॥

पैगाम अरशद

दिलों में उलफत हो मादरे वतन की ।

ये दावरे दो आलम चरवा हो इस सखुन की ॥

सबा तू जाकर सारे जहाँ में कहना ।

उलफत का हरि पहिनी अच्छा यही है, गहना ॥

यही है गहना अच्छा यही है गहना ।

॥ मर्कूम तुमने हरेगिज इस से कभी न रहना ॥

मजहब और वतन

१५

नही जायज किसी मजहब में बदलवाये वतन होना ।

कि नादानी है शाये आशिया पर आरा जन होना ॥

जो लाला है रहे लाला जो नरगिस है रहे नरगिस ।

जकरी कुछ नहीं है नस्तर्न को यासमन होना ॥

इस अपनी र रगत में भी तुम जेबे गुलिस्ता हो ॥

नही जेग बिबर कर बना, ताराजे कुहन होना ॥

तुम आखिर फूँनहो गुलशन के और गुलशन तुम्हारा है ।

बहार उसकी वहाँ है बस तुम्हारा खन्द। जन होना ॥

कभी गुलदस्तां गर देखो तो यह भी दखना इसमें ।

कि इक जाई पे है मौजूफ जेने अन्जुमन होना ॥

करो तुम खिदमते ग्राके वतन सब मुत्तफिक हाकर ।

नहीं दाखिल कुछ इस मुयहस में शेवो परहमन होना ॥

अभी फीरोज बाकी है बहुत सी गुफ्तनी बातें ।

सकूत आमोज है लेकिन मुझे तूले सपुन होना ॥

करनल वैजबुड से इलतजा

मैंने करनल वैजबुड से भी यूँ जाकर इलतजा ।

पहिले लाजिम है कि अमृतसर को जायें आप भी ॥

या गुलामों की जमीं पर आकर रक्खा है कदम ।

सरको गोरे रंग के आगे मुकार्यें आप भी ॥

'शुबार' आराम से रहने की तुमको आरजू है तो ।

अदावत दूर करो और मोहब्यत दिल में कर पैदा ।

गर स्वराज मिल जाये -

हमारे दर्द कोई इलाज मिल जाये ।

दया हो ऐसी कि जिस से मिजाज मिल जाये ॥

मरीजे गुम पे-मसीहा की अफ इनायत हो ।

करे न वादा कयामत का आज मिल जाये ॥

नहीं यह चाहते हम गैर के बने हाकिम ।

नहीं हवस कि हमें तख्तों ताज मिल जाये ॥

बहाँ तो फिक्र है बस पेट की पडी हर दम ।

शिकम, पुरी ही को पूरा अनाज मिल जाये ॥

हैं सब से पीछे पडे दौड में, तरक्की की ।

बढ़ें हम आगे हमें गर स्वराज मिल जाये ॥

पैगाम अरशद

दिलों में उलफत हो मादरे वतन की ।

पे दावरे दो आलम चरवा हो इस सखुन की ॥

सबा तू जाकर सारे जहाँ में कहना ।

उलफत का हार पहिनी अच्छा यही है गहना ॥

अच्छा यही है गहना अच्छा यही है गहना ।

अहकम तुमने हरगिज इस से कमी न रहना ॥

मजहब और वतन

नहीं जायज किसी मजहब में बदरवाहे घतन होना ।
 कि नादानो है शारे आशिया पर आरा जन होना ॥
 जो लाला है रहे लालो जो नरगिस है रहे नरगिस ।
 जकरी कुजु नहीं है नस्तर्गन को यासमान होना ॥
 इस अपनी र रागत में भी तुम जेवे गुलिस्ता हो ।
 नहीं जेग बिपर कर वजा ताराजे कुहन होना ॥
 तुम आखिर फूलहो गुलशन के और गुलशन तुम्हारा है ।
 यहार उसकी घहा है बस तुम्हारा खन्दा जन होना ॥
 कभी गुलदस्तां गर देयो तो यह भी देखना बसमें ।
 कि इक जाई ये है मौकूफ जेवे अन्जुमन होना ॥
 करो तुम घिदमते याके वतन सब सुत्तफिक हाकर ।
 नहीं दाखिल कुछ इस मुबहस में शेखो घरहमन हीना ॥
 अभी फीरोज याकी हैं बहुत सी गुफ्तनी याते ।
 सकूत आमोज है लेकिन मुझे तुले सखुन होना ॥
करनल वैजबुड से इलतजा
 मेने करनल वैजबुड से ही यू जाकर इलतजा ।
 पहिले लाजिम है कि अमृतसर को जायें आप भी ॥
 या गुलामों की जमीं पर आकर रक्खा है कदम ।
 सरको गोरे रंग के आगे मुकायें आप भी ॥

जलियां वाले बाग के दिल दोल मन्जर में जरा ।

कान, से मुनिये शहीदों की सदायें आप भी॥

रौंग, कर चलना पडेगा मारशलला है यहाँ ।

कितना चलते हैं जरा चलकर दिखायें आप भी॥

नन्हें २ बच्चों के मानिन्द कोड़े खाइये ।

नाक को मिट्टी पे रगड़ें गिड गिडायें आप भी॥

लोहे के पिंजरो में जब जायेंगे, आयेगा मजा ।

कैद होकर जेल के कुछ लुत्फ उठायें आप भी॥

कौम के शेरों के होकर हम-नबाए-नाज-आज ।

जलियां वाला बाग की जय २ मनायें आप भी॥

स्वदेश वस्तु

इलाही गुल-हो यह आज घर घर स्वदेश वस्तु ! स्वदेश वस्तु !!

पुकारें दिल से स्वदेशी होकर स्वदेश वस्तु स्वदेश वस्तु !!

भरा हुआ है जो दिल के अन्दर स्वदेश वस्तु स्वदेश वस्तु !!

निकालो जोशे दिली यह कहकर स्वदेश वस्तु स्वदेश वस्तु !

घतन के हम हैं घतन हमारा किन्तो का इस में नहीं इजारा ।

कहेंगे हम जोश में बराबर स्वदेश वस्तु स्वदेश वस्तु !!

सहलका आलम में डालदेंगे खराबिया सब निकाल देगे ।

मचाके यह गुल घतनके लीडर स्वदेश वस्तु स्वदेश वस्तु !!

ओ शै किसीकी धिलायतीहों तुम्हेजो मिलती रियायती हो !!

यह कहके उसको लगावो ठोकर स्वदेश वस्तू स्वदेश वस्तू॥
 जो जान लेन अजल भी प्राये वतन की उलफन नदिलसे जाये
 पसे फना भी रहे जया पर स्वदेश वस्तू स्वदेश वस्तू॥
 लहू शहीदे वतन का घहकर यह रग लाये बरोज महशर ।
 पुकार उठे जवान अन्जर स्वदेश वस्तू स्वदेश वस्तू॥
 चलावो कुछ ऐसा आज अफसू जमाना होजाय दिलसे मफतू
 पढ़ावो सको यह दोहा अन्तर स्वदेश वस्तू स्वदेश वस्तू॥
 अगर तरकी की आरजू है जो मिलके चलने कि तुममें खू है
 तो कहदो सय एक जावान होकर स्वदेश वस्तू स्वदेश वस्तू॥
 जहाँ में हुब्बेवतन का चर्चा इनाही होजाय आज ऐसा ।
 कि चश्मा २ पुकारे घर २ स्वदेश वस्तू स्वदेश वस्तू॥
 मरो जो हुब्बे वतन के नारे तो चोक उठे जमीं के कितने ।
 सदा यह देकर उठार्ये महशर स्वदेश वस्तू स्वदेश वस्तू॥
 मजातो जय है सिधाय स्वदेशी मिले न शे एक भी विदेशी ।
 फिरे यह हर एक कहता ताजर स्वदेश वस्तू स्वदेश वस्तू॥
 इसी चाहत का राग गावो यही बराबर जबा पे लावो ।
 हमारा प्यारा हमारा दिलघर स्वदेश वस्तू स्वदेश वस्तू॥
 जोकुछ पढोतुम यहोपढ़ो तुम जो कुछ कहो तुमयहो कहो तु
 यही बजीफा होआज सबका स्वदेश वस्तू स्वदेश वस्तू॥
 यही सदा मन्दरों में गूजे यही हो गिरजा घरों में चर्चे ।
 यही हो गुल मसजिदोंके अन्दर स्वदेश वस्तू स्वदेश वस्तू॥

क्यों ओ गंधे स्वराज की तुम को फिर नहीं

कल एक गंधे से कर दिया मैं यौही सवाल ।

क्यों ओ गंधे स्वराज का तुम को फिर नहीं ।

सुनकर गंधे ने यह कहा मु ह को जग समाल ।

करता तू अपनी कोम का बिल्कुल जि हर नहीं ॥

अपने को छोड़ गैर के जी जा निसार है ।

हजरत ! गंधे से बढ़ कर है कौमी गदार है ॥

आजाद होने का वक्त है,

अपनी हिम्मत से बढ़ो क्या शेर है इमवाद का ।

। मुन्तजर हम से रहा जाता नहीं मीयाद का ॥

। ऐसीराने कफस यह वक्त है इमवाद का ॥

। सुनते है गुलची से भगडों छिड़ गया सय्याद का,

। देके आजादी का ज्ञाना कर लिया, मुझको, असिर ॥

। पूछते है हाल, क्या उस बुल बुले नाशाद का ॥

। आघो, मिल कर सब कफस की तोड़-डालें तोलिया /

। जुलम अब हमसे सहा जाता नहीं सय्याद का ॥

। तिलक

। भाई बहिनो का धारा, याल गंगाधर, तिलक ॥

। मादरे मुशफक कोपारा बलि गंगाधर तिलक ॥

मुस्क का रोशन सितारा बालगंगाधर तिलक ।

हिन्दू की आँखों का तारा बाल गंगाधर तिलक ॥
छोड़ कर हम तो अकेली बाल गंगाधर तिलक ।

बल दिया जखनकी तनहा बालगंगाधर तिलक ॥

बेनाजियों का झूठारा बाल गंगाधर तिलक ।

बेवसीलों का बसोला बाल गंगाधर तिलक ॥

लुफ और रहमन का चंद्रमा बालगंगाधर तिलक ।

प्रेम और उलफत का दरिया बाल गंगाधर तिलक ॥

आब ग गा का था प्यारमा बाल गंगाधर तिलक ॥

आब ग गा ही में डूबा बाल गंगाधर तिलक ॥

गाते २ कृष्ण गीता बाल गंगा धर तिलक ।

सोगये फिर कंट के टीका बाल गंगा धर तिलक ॥

देख कर स्वर्गी नजारा बाल गंगाधर तिलक ।

होगये महवे तमाशा बाल गंगाधर तिलक ॥

है बुझी तेरी रियाया बाल गंगाधर तिलक ।

पढ़ती है गम का फलोंना बालगंगाधर तिलक ॥

अल्लाह ने चाँहा तो स्वराज मिलेगा

गांधी तेरा आना हमें पैगाम बका है,

मुर्बों को बू करदेता है जिन्दा यह धुना है ॥

ये मेरे मसीहा तेरा दीवार बंधा है ।

दर्शन तेरा ये हाजिके क़दानी शिफा है ॥

क्यों ओं गंधे स्वराज की तुम को फिर नही।

कल एक गंधे से कर दिया मैंने योंही संभाल ।

क्यों ओं गंधे स्वराज्य का तुम को फिर नही ।

सुनकर गंधे ने यह कहा मुंह को जग सभाल ।

करता तू अपनी कोम का बिल्कुल जिहर नहीं ॥

अपने को छोड़ गैर के जो जा निसार है ।

हजरत ! गंधे से बढ़ कर हे कौमी गदार है ॥

आजाद होने का वक्त है,

अपनी हिम्मत से बढ़ो क्या शेर है इमदाद का ।

मुन्तज़र हम से रहा जाता नहीं मीयाद का ॥

पेन्सीराने कफ़स यह वक्त है इमदाद का ॥

सुनते हैं गुलचीं से भगडा छिड गया सय्याद का,

देके आजादी का लास्रा कर लिया मुभको असौर ।

पूछते हैं हाल क्या उस बुल बुले नाशाद का ॥

आघो मिल कर सब कफ़स की तोड, डालें तोलिग्रां ।

जुलम अब हमसे सहा जाता नहीं सय्याद का ॥

तिलक

भाई बहिनी का धाता, बाल गगाधर तिलक ।

मादरे मुशफक काप्यारा बलि गगाधर तिलक ॥

मुस्क का रोशन सितारा बालगंगाधर तिलक ।

हिन्द की आँखों का तारा बाल गंगाधर तिलक ॥

छोड़ कर हम को भकेना बाल गंगाधर तिलक ।

अल दिया जलनको तनहा बालगंगाधर तिलक ॥

बेनावाओं का महारा बाल गंगाधर तिलक ।

बेवसीलों का वंसीला बाल गंगाधर तिलक ॥

लुत्फ और रहमन का चश्मा बालगंगाधर तिलक ।

प्रेम और उलफत का दरिया बाल गंगाधर तिलक ॥

आब गंगा का था प्योना बाल गंगाधर तिलक ॥

आब गंगा ही में डूबा बाल गंगाधर तिलक ॥

गाते २ कृष्ण गीता बाल गंगा धर तिलक ।

सोगये फिर करे के टीका बाल गंगा धर तिलक ॥

देख कर स्वर्गी नजारा बाल गंगाधर तिलक ।

दो गये महवे तमाशा बाल गंगाधर तिलक ॥

है दुखी तेरी रियाया बाल गंगाधर तिलक ।

पढ़ती है गम का फसोना बालगंगाधर तिलक ॥

अल्लाह ने चाँहा तो स्वराज मिलेगा

गांधी तेरा ज्ञाना हमें पैगाम बका है

मुर्दों को दू कर देता है जिम्मा पड़ चुना है ॥

ये मेरे मसीहा तेरा बीदार दया है ।

दर्या तेरा ये दाजिके खानी ठिका है ॥

औतार स्वराज्य रहमत के फिरिश्ते ।

॥ हैं पास तेरे हिन्द की किन्नमत के नबिश्ते ॥

या डियूक की आमद से मो मानम का नजारा ।

लेकिन तेरे इकगाल का रोशन है मिनारा ॥

करता है जिधर हिन्द में जाने का इशारा ।

क़दमो को तेरे चूमती है शोकने दारा ॥

इस तेरी फकीरी से लरजते है शाहशाह ।

यौरूप में तेरे नाम से पैदा है तहलका ॥

हम खिरमने हस्ती में हैं आतिश का शरारा ।

ठन्डा किये रहता है उसे इकम तुम्हारा ॥

वरना हमें जोना नहीं जदलत का गवारा ।

तो हम को छुडी क़ैद गुलामी से खुदा रा ॥

ये हिन्द मुझे तेरो ही इज़्ज की कसम है ।

ये शाह हिमालय तेरा रफ़ अन्न की क़सम है ॥

झायर तेरी बेदाद को वहशत क़सम है ।

इस जाधरो ज़ालिम का इक़मत की कसम है ॥

हम चाल चलें पेसी की आदा को हो सकता ।

हो अदम तआयुन से ही दिल का उन का शिकस्ता ॥

न तोप न बन्दूक न हो फौजका दस्ता ।

लें आप ही वह हिन्द से इक़लेड का रस्ता ॥

इसी तीर से ही तयत हमें ताज मिलेगा ।

अल्लाह ने चाहा तो स्वराज्य मिलेगा ॥

है सियासत की फुजा पर गौरी

और काली पतंग

दिल में जो उलफन है गांधी की वह हो कय और से ।

शाह हो या प्रिंस हो या डियू न कनाट हो ॥

नोरतन-जिन्दा हा और फिर अकरी दर्राट हो ।

हो इधर कुरआन गीता का उधर से पाठ हो ॥

मालवी, दोनों अलो, आज्ञाद हों, नेहक वो लात ।

जफर व निचलू हा गवर्नर उनपर गांधी लाट हा ॥

है सियामत की फुजा गौरी और काली पतंग ।

गोरा गोरे मुल्क में जाकर गिरे वह काट हो ॥

टेम्ज आफ लन्दन के मन्जर आपजा कर देखये ।

हमको यह गंगा हमारी और इनका घाट हो ॥

याद रखो अय मुनाविक की नहीं गलने की दाल ।

धोबी का कुत्ता है वह उसका न घर न घाट हो ॥

चाहते हो गर कि अय स्वराज हासिल हो हमें ।

अहद कीजे कामयाब अपना यह वार्ड काट हो ॥

झोडदो फौक उम भडक मिश्री विदेशी पैरहन ।

पैरहन खहर की हो बिस्तर की पेसी टाट हो ॥

कौम के गहारें सब वषफे खुशामद होगये ।

इनका माया और गोटे रेग की चोखाट हो ॥

कलाम जीहर

(मोलाना मोहम्मद अली साहिब की यह नज़म जो
नेज़रबन्दी के समय आपने लिखी थी ।)

हर रंघ में राजी बरजा हो तो मजा देख ।

दुनियां ही में बैठे हुये जन्नत की फ़जा देख ॥

है सन्नते अरवाये वफ़ा सघो तवक्कुल ।

छोटे न कहें हाथ सो दामाने खुवा देख ॥

दशते रहे गुरबत में अकेला तो नहीं तू ।

बतहा के सुहाजिर का भी नशे कफे पा देख ॥

तू तीर अबाबील से हरगिज नहा कम जोर ।

बेचारगी पर अपनी न जाने खुश देख ॥

इस तरह के जीने में भी मरने का मज़ा है ।

किस्मत में यही है कि अमो गहे क़जा देख ॥

अल्लाह के बांको का भी है रग निगला ।

इस सादगी पर शोखिये खूने शहदा देख ॥

यह नूर खुदा का है बुझाये न बुझेगा ।

कुछ दम है अगर तुझमें तो आ तू भी बुझा देख ॥

समझा भी है कुछ तो कि यह है किससे तमरुद ।

अल्लाह को मान अपनी हकीकत को जरा देख ॥

हो लाख नज़र बन्द हुआ बन्द नहीं है ।

अज्ञाह के बन्दों को न इस वर्जा सना देख ॥
हो हुस्न तलब लाख मगर कुछ नहीं मिलना ।

हो सिद्धके तलबे फिर अलर आहरना देख ॥
तू तेरो दो रोजा मेरा पैसा है अजुल का ।

पारन्द जफा तू है तो मेरी भी बरुा देख ॥
अकश तो कहीं घां नहीं दुनियाँ का भी कुछ ठीक ।

हम काफ़िरे बे फैज़ से दिल तू भी लगा देख ॥
सोने का नहीं बरुा यह होशियार होगाफिल ।

रगे फलक पीर जमाने की हवा देख ॥

महात्मा गांधी की बन्सरी ।

गांधी ने सत्याग्रह की क्या बन्सरी बजाई ।

धुन में मगन हो इसकी अपनी खुदी भुलाई ।

होने से आक पहिले कहते हैं आक होजा ।

ये मुश्त आक धरना क्या खाक है बडाई ॥

किशते अमल का अपनी वे आव जानों, तन का ।

सर सब्ज हिन्दू होगा धरना है सब दिडाई ॥

बन्ती मिटा दे अपनी बहरे बतम जो दाना ।

वह दन से देख कसरत करती है रबनुमाई ॥

अपनी मदद करो तुम अपने ही पांव पर हो ।

माने कमी, किसी ने आजादी मा है पाई ।

बेनी खुदाक आभा देखी पीराक पहिनो ।

देशी हो तर्ज सादा देशी रहे कमाई ॥
बक्किस्मता से इक से दो तीन हो गये थे ।
फिर एक हो रहे हैं वह बनसरी बजाई ॥
भारत को जान माता सब पूजने लगे हैं ।
हिन्दू अड्डूत, मुस्लिम, सिख, जैनी, औ ईसाई ॥
पढ़ते गले जो कल थे मिलते गले हैं बाहम ।
दिल से मिठा तश्चाखुव क्या एकता सिखाई ॥
आवे वफा से ही यह फूले चमन हमारा ।
नगमा सरा हो बुलबुल गुलपर यों पा रिहाई ॥
शाबाश आफरीं हे गांधी महात्मा को ।
बन्सी बजा के िसने आजादी है दिलाई ॥
पे कृष्ण रूप गांधी तू लाज रखे वतन को ।
भारत हे द्योपदी धन तेरी शरण में आई ॥
बन्सी मलिक अश से एक बार फिर बजा के
गौवों को तू बेचाले है मारते कसाई ॥
देशभक्त लाला लाजपत राय जी
का
स्वागत ।
हो मुबारक कौम के सरताज आये हे ।
कि लाला लाजपतराय वतन में आज आये हे ॥
हिन्द की मगरिब में रककर लाज आये हे ।

नई सौगात लेकर रह बरे सौगात आये हैं ॥

मुबारक बाद अमरीका से भारतवर्ष पर आये ।

तरकी करते र फर्श से हैं अर्थ पर आये ॥

बिलाये है गुले मकसूर खारस्तान गुरबत में ।

खटकते हो रहे बन बन के काटा चश्म हैरत में ॥

जहाँ तक हो सका कोई कसर छोड़ो न मेहनत में ।

शुजाअत के कदम आगे रहे मैदान हिम्मत में ॥

जब शमशेर थी दिल कर लिये तसखीर गैरों के ।

कि उनके सामने चलने न पाये तीरंगैरों के ॥

बतम के फावदे के चास्ते गैरों से की यारी ।

कि मकसद आपका था हिन्दावानों की तरफदारी ॥

यया करदी मरीजे कौम को जो जो थी थीमारी ।

कि रौलट एक्ट से जाँ पर वनी है जम्म है कारी ॥

असीरे गम गिरिफ्तारे यला चाकत के मारे हैं ।

सिसक कर उमर काटी है तड़प कर दिन गुजारे हैं ॥

गर्ज जो हाल था हिन्दूस्तों का कह दिया सारा ।

बजाया जोर से फरियाद का अलाम में नकारों ॥

दकीकत में तूही भारत के है इके बाल का तारा ।

पुकार बठा जमाना लाजपतराय का जय कारा ॥

मोहब्बे कौम है शोहरा है तेरी पाक बाजी का ।

तेरोसर सहरो है हिन्दूस्तों की सर फराजी का ॥

बोही करता रहा आज्ञादियों की आरजू बर्षों ।

बतन तक में भी छानी आक तुने कूबक बर्षों ॥

न आया वे बतन होकर हमारे क बरु बर्षों ॥

तेरी आंखों से गुरबत में रहा जारी लहू बर्षों ॥

गुजब का सोज लेकिन भर दिया कौमी तराने में ।

बहार आई है बुलबुल आ गया फिर आशियानेमें ॥

इधर आ तु तेरे कपड़ों से भाड़े गर्द कुलफन को ।

नया तुरी-लगावें आज तेरी शानाशौकत को ॥

हैं निकालेंगे तेरे तलबों से चारे वशते गुरवत को ।

तेरी जब तक जियेंगे याद रखेंगे हनायत को ॥

तेरी ईंसार नफसी पर 'खलीके' जार कुर्या है ।

हमारा मेहरवा है, तु हमारा राहते जा है ॥

कारंवाने सिद्ध के सोलर हैं शौकत अली

शाहिदे ईमान का सिंगार हैं शौकत अली ।

कुलजमे हक के दरे, शाहवार हैं, शौकत अली ॥

पास आ आकर पलट जाये न किस तरह अजल ।

मुसलिमे यीमार के गमस्वार हैं शौकत अली ॥

बर्ष तसलीस अपना मतवाला बनाये किस तरह ।

बावये तोहीद से, सर, शार, हैं, शौकत अली ॥

हर, कसूल को है जुमायां, रगे लहूबत का भूक ॥

अन्दलीबे खिल्द की मिन्कार हैं शौकत अली ॥
अब नीसां पानी पानी हो गयो है शम से ।

इस तरह मजलिसमें गौहर यार हैं शौकत अली ॥
ताकि इस बद् अहद को ले आय राहे रास्त पर ।

कारवाने सिद्क के सरदार हैं शौकत अली ॥
अब कमेटी मरकज़ी के दृष्य से चकर में है ।

वर्स गाहे हिन्द में पैकार हैं शौकत अली ॥
आदिमे काबा हैं और हैं तरजमाने मुस्तफा ।

शाहे दो आलम के खिल्दमत गार हैं शौकत अली ॥
इम्तहाने गह में न हो क्यों शौकतो रफअत निसार ।

जैश अहमद के अलम बरदार है शौकत अली ॥
आक पाये मुस्तफा होकर हुआ पाया बखन्द ।

सर फराज़ो सरवरो सरदार हैं शौकत अली ॥
हुसयुलो को अब कफस का खौरु श्या होये नज़ीर ।

नासिरे दीं हांमिये गहरार है शौकत अली ॥
बोलती हुई मूरती

नागपुर काँग्रेस के म्प्रेज़ पर महात्मा निलक की मूरती
का सामोश लेकचर)

हिन्द के सपूतो, ये काँग्रेस वालो !
ये मेरे भाई बन्धो ! ये मेरे देश वालो !

गो जिस्म से किया है मैंने अदम तथाबुन ।

है रुह को अभी तक खराज को वही धुन ॥
मुमकिन नहीं कि देखो तु मुझको चश्म सर से ।

देता हूँ मैं दिखाई अब रुह की नगर से ॥

मौजूब रुह मेरा इस जलया गाह में है ।

जलया मेरा तुम्हारी सब की निगाह में है ॥

हां मैं वही तिलक हूँ चरवा है आम जिसका ।

माथे पे हिन्दूओ के तिखा है नाम जिसका ॥

स्टेज पर तुम्हारे गरजा हूँ उमर भर मैं ।

देता हूँ आज तुमको खामोश लेकर मैं ॥

ये राग गाने वालो आज्ञादिये घतन का ।

कब तक पढ़ोगे तौहा बरवादिये घतन का ॥

हर कौम आजुकी है जेलांगह अमल में ।

यह वक्त है अमल का दौडो रहे अमल में ॥

बातों से कुछ न होगा छोडो जूबां दराजी ।

फँको अमल का पासो जी तो अमल को बाजी ॥

तुम लाख भी बजावा फरियाद की नफ़ीरी ।

मुमकिन नहीं कि बदले कानून सख्त गीरी ॥

हुकाम कर चुके हैं रहमों करम से तोषी ।

हर एक हट धर्म ने करली धर्म से तोषी ॥

बरबास्त होचुकी है इंसफ़ की अदालत ।

करता नहीं है कोई मजलूम को बकालत

कबतक यह शोर शेवन कब तक यह आहो

आसान यों न होगी यह मुश्किल तुम्हारी ॥
स्वराज से तुम अपने मकसद को पास कराओ ॥

स्वराजही से अपनी थिगडी बना सकोगे ॥
स्वराज से तुम्हारा दुख दूर दूर होगा ॥

स्वराज तुमको हासिल होगा जरूर होगा ॥

पाँधो कमर का उठो स्वराज लेके छोड़ो ।

मुमकिन हो आज लेना तो आज लेके उठो ॥

बेताज, हिन्द का है तू ताजदार गांधी !

ए कहे रवां भारत पे गम गुजार गांधी ।

ए नौ निहाल भारत ए जानिसार गांधी ॥

अपने आराम दुख की परवाह नहीं है तुझको ।

भारत के दुख से हे तू सीना फिगार गांधी ॥

तेरा है दम गनीमन तेरा कदम मुगारक ।

ए माधरे घतन के खिदमत गुजार गांधी ॥

ए शान्ती की मूरत पैगम्बरे आजादी ।

सत्याग्रह के बानी सत्य के औतार गांधी ॥

सोजे घतन की तूने वह यासरी बजाई ।

बेदार कर दिये सब नर और नार गांधी ॥

हुम्मे घतन की हर सू फैलाई है सुगंधी ।

हे इरम वा मुसम्मा भारत सिगार गांधी ॥

तूने हमें सिखाया सबके अहम तआहुन ।

तूही करेगा भारत की नाव पार गांधी ॥
तेरे ही सिर पे सेहरा भारत स्वराज का है ।

उस दिन का कर रहे हैं हम इन्तजार गांधी ॥
भारत का बच्चा २ गुन तेरा गा रहा है ।

और मुन्तजर है तेरा मुल्को दियार गांधी ॥
साल आध साल किस का कल को स्वराज लेले ।
भारत में, और भी हों गर गाच चार गांधी ॥
पहिले तो लोग दुख में करते थे याद माँको ।

अब निकलता है मुँह से बे अखत्यार गांधी ।
उजड़े हुये खमन का एक पास्वान तू है ।

बे ताज हिन्द का है तू नाज दार गांधी ॥
बराबत सिंह के लब पे हर दम यही दुमा है ।
भारत में होवे पैदा अब बेशुमार गांधी ॥

हिन्दुस्तान की उम्मीद-माहात्मा गाँधी

बह कौन जलवा फ़िगन हैं ? महात्मा गांधी ।

बह कौन फ़क़रे ज़मन हैं ? महात्मा गांधी ॥

बह कौन सोखता तन हैं ? महात्मा गांधी ।

बह कौन जाने वतन हैं ? महात्मा गांधी ॥

अब इनके आने की देहली में बन्दशो न रही ।

बदक गही थीं दिलों में जो जागिश् न रह्यो ॥

बह बह है कौम पे तन मन मिटाये बैठे हैं ।

गदाये मुल्क ते धूना रमाय बैठे हैं ॥

वतन परस्तां पे ईमान लागे बैठे हैं ।

धनी हैं बात के आसन जमाये बैठे हैं ॥

बह फरके रहते हैं जो दिल में ठान लेते हैं ।

यह बह इ नाम पे भारत के जान देते हैं ॥

मुहब्बे कौम है अहले वतन के प्यारे हैं ।

यह चश्मे मादरे हिन्दूस्तां के तारे हैं ॥

यह बह है आक नशीनों के जो सहारे हैं ।

हजार जान से हमद्दु यह हमारे हैं ॥

यही हैं माय पे सद नाज हिन्दियों के लिये ।

यही हैं कौम के दम साज हिन्दियों के लिये ॥

तू मुत्की कौम का है दर्द आशना गांधी

दिल में घर है तो आर्षों में तेरी जा गांधी ।

तू मुत्की कौम का है दर्द आशना गांधी ॥

बह दिल में बैठती है दिल से जो निकलती है ।

न किस तरह हो मौअस्सर तेरी सदा गांधी ॥

मूख से है बरी कारगाहे इलम तेरी ।

कि जो अमल है तेरा है बह बे रया गांधी ॥

तूने हमें दिखाया सबके अहम तमायुन ।

तूही करेगा भारत की नाव पार गांधी ॥
तेरे ही सिर पे सेहरा भारत स्वराज का है ।

बस दिन का कर रहे है हम इन्तजार गांधी ॥
भारत का बच्चा २ गुन तेरा गा रहा है ।

और मुन्तजग है तेरा मुल्को बियार गांधी ॥
सात आध साल किल का कल को स्वराज लेले ।

भारत में, और भी हों गर गाच चार गांधी ॥
पहिले तो लोग दुख में करते थे याद मांको ।

अब निकलता है मुंह से वे अख्तयार गांधी ॥
उजड़े हुये खमन का एक पास्वान तू है ।

वे ताज हिन्द का है तू नाज वार गांधी ॥
बराबत सिंह के लव पे हर दम यही तुभा है ।

भारत में होवे पैदा अब बेशुमार गांधी ॥

हिन्दुस्तान की उम्मीद माहात्मा गाँधी

बह कौन जल्वा फ़िगन हैं ? महात्मा गांधी ॥

बह कौन फ़खरे ज़मन हैं ? महात्मा गांधी ॥

बह कौन सोखता तन हैं ? महात्मा गांधी ।

बह कौन जाने बतन हैं ? महात्मा गांधी ॥

अब इनके आने की देहली में बन्दगी न रही ।

किस तरह भूल इसे मैं जगति कपमन में मेरी ।

निख चुका है राकमे तहरीर बन्देमात्रम् ॥

फिक क्या जल्लाद ने जब फल पर बाधी कमर ।

रोक देगा दूर से शमशेर बन्देमात्रम् ॥

जुलम से गर कर दिया खामोश मुक्तो रखना ।

बोल उठेगी मेरी तस्वीर बन्देमात्रम् ॥

सर जमी इ गलेन्द की हिल जायेगी दो रोत में ।

गर विशायेगा तमी तासौर बन्देमात्रम् ॥

सन्तरी भी मुजतरथ थे जब कि हर भुत्कार में ।

बोलती थी जेल में जन्जीर बन्देमात्रम् ॥

गीत भारत के भला गायें तो गाये क्योंकर

कष्ट भारत के मिटाये तो मिटाये क्योंकर ।

दर्द दिल अपना सुनाये तो सुनाये क्योंकर ॥

बचाये खरगोश में सोते हैं नहीं कुछ सुध बुध ।

अहले भारत को जगाये तो जगाये क्योंकर ॥

मगरबी चमकने चौप्रिया दी है ब्राँलें सब की ।

नकश भारत को दिखाये तो दिखाये क्योंकर ॥

तेरा ब्याल है पाक और कौन है बेलोन ।

तेरा जमीर है घेगाना अना गाँधी ॥

दिया है हिन्द को तुम-ईसा का मशक तुन ।

है बाल गाल तेरा कौम पर फिदा गांधी ॥

जो कह के एक तू रहा कौद भी तो रंज नहीं ।

कफस में रहते हैं मुरगुने खुशानवा गाँधी ॥

जमाना क्या न तेरे दुकम की करे तामील ।

कि मानता नहीं तू नफस का कर्हा गाँधी ॥

सुना है नकशे निगार जहाँ से नकशे हमीर ।

बरी है बूये रिया से यह बोरिया गांधी ॥

शमोम खलक मको से जहाँ मोअपर है ।

सब आफरी है तुझे पे महात्मा गांधी ॥

सपूत तुझ से करे मादर वतन पैदा ।

यही है फैज की सुबहो शाम हुआ गांधी ॥

बन्दे मात्रम्

कौम के खादिम को है जागीर बन्देमात्रम् ।

है घतन के वास्ते अकसीर बन्देमात्रम् ॥

दाकिमों को है इधर बन्दुक पर अपनी गुरू ।

हैं इधर हम बेकसों के तीर बन्देमात्रम् ॥

कत्ल कर हम को न प कातिल हमारे खून से ।

तेग पर हो जायगा तहरीर बन्देमात्रम् ॥

किस तरह भूल इसे मैं जबकि कि पमत मैं मेरी ।
 निज चुका है राकमे तहरीर बन्देमात्रम् ॥
 फिर क्या जल्लाद ने जब फरस पर याची कमर ।
 रोक देगा दूर से शमशेर बन्देमात्रम् ॥
 जुलम से गर कर दिया खामोश मुझको रखना ।
 बोल उठेगी मेरी तस्वीर बन्देमात्रम् ॥
 सर जमी इ गलेन्ड को हिल जायेगा दो रोट, मैं ।
 गर दिखायेगा कभी तालीर बन्देमात्रम् ॥
 सन्तरी भी मुजतरा ये जब कि हर झंकार मैं ।
 बोलती थी जेल में जन्जीर बन्देमात्रम् ॥
गीत भारत के भला गाये तो गाये क्योंकर
 कष्ट भारत के मिटाये तो मिटाये क्योंकर ।
 दर्द दिल अपना सुनाये तो सुनाये क्योंकर ॥
 श्वाबे खरगोश में सोते हैं नहीं कुछ सुध बुध ।
 अहले भारत को जगाये तो जगाये क्योंकर ॥
 मगरबी चमकने चौधिया दी है आँखें सब की ।
 नकश भारत का दिखाये तो दिखाये क्योंकर ॥
 आप कांगाल हुये ओरों के घर भर भर कर ।
 इनको मरत भी दिलाये तो दिलाये क्योंकर ॥
 किसी ने ऐसा सु चाया है क़ोरी फारम ।

होश में इनको गर लाये तो लाये क्योंकर ॥

रोय साहिब है कई ज्ञान बहादुर कोई ।

इन से हम आज मिलाये तो मिलाये क्योंकर ॥

अपने भाइयों के गल काट लेने हे खताब ।

इनकी आदिने यह हटाये तो हटाये क्योंकर ॥

वर्दे भारत का नहीं जिनके दिलों में मुगलक, ।

इनको स्वराज दिलाये तो दिलाये क्योंकर ॥

इन्हें कुछ खबर नहीं दुनिया व माफीहा की ।

रात दिन मगज खपाये तो खपाये क्योंकर ॥

मादरे घतन का गम खागयो हमको बिलकुल ।

इसका हमगम भी अगर खायें तो खायें क्योंकर ॥

एक कतरा भी नहीं पाना का आँसों में रहा ।

रज के आँसू बहाये तो बहाये क्योंकर ॥

हम को रोने भी नहीं देती है सो० आई० डी० ।

गीत भागत के भला गाये तो गाये क्योंकर ॥

दिल में तो उदुत हैं यशवतीपिह उठती लहरें ।

पर जब अपनी हिलाये तो हिलाये क्योंकर ॥

भारत माता से खिताब

॥ भारत बतावे मुझको कि इतनी सौगवार क्यों
किस बात का है तुम्हको तू इस कदर बेकरार ॥

हुई क्यों इतनी आजुर्दा खातिर पहुँचाया किसने वह रंजतुलको
 हौ जिसके घाँस करोड बेटे फिर उसको इतना आजार क्यों है ॥
 क्यों मुखपे छाई है इतनी जरदोजिस्मिनी हड्डियों का दाँवा ।
 कहां गया रंगे आभुवानी यह मोत कासा आसार क्यों है ॥
 न खून का अब बदन में तेरे दिलाई देता है एक कतरा ।
 घुसी हुई दोनों आस्र अन्दर यह दमकदम का शुमार क्यों है ?
 बदन में राशां जवां में लोफनत हलक में कांटे पड़े हुये हैं ।
 न तनपे कपडा न मु हमें लुकमा तू जिन्दगीसे बेमार क्यों है ?
 शिरोमणि थी तू कुल जहाँकी जमाना भर की थी अन्नदाता ।
 कराडों पाले यतीम तूने खुद आज इतनी लाचार क्यों हैं ॥
 जन्म के भूँके सिधा के नगे जो दाने २ को तरसते थे ।
 किया उन्हें भी निहालतूने मगर तू अन्न खुदाई खयार क्यों है ?
 प्राण थी अन्न, पूरना तू हुई, ये देवी दयाल जस पर ॥
 बनाये बिगड़े हुये करोडों यला में खुगिरफतार क्यों है ?
 वही जमी और आस्मां है वही है सूरज व चाँद तारे ।
 वही हवा और वही है पानी तो सिरपे फिर गमसवार क्यों है ?
 वजह नहीं कुछ समझ में आती क्यों रो रही जा र इतना ।
 न समझा 'यशवतसिंह' कि तूने उतारा अपना निगार क्यों है ?

भारत माता का जवाब

ए राह, रो तू राह से अपनी न पूछ कि मेरा हाल क्या है ।

रहेगा हिन्द में उठता यह मातम का धुवां कब तक ॥

बहुत में होचुकी बरबाद निगरानी में गैरों की ।

न जाने यह रहेंगे और मेरे पासवां कब तक ॥

तगकी और नज्जुल को सुना है दौर होता है ।

नहीं मालूम आयेगा यह पहिला सां समां कब तक ॥

अगर कानून घरका है तो खुदाई तो नहीं घर की ।

रहोगे उस शर्हों के शाह से तुम सरकशां कब तक ॥

बहुत रोये बहुत पीटे नकुछ मतलब हुआ हासिल ।

रहोगे इस तरह यशवंत सिंह नाला कुनांकुष तक ॥

आजाद हिन्द

होंगे ज़रूर अब तो आजाद हिन्द वाले ।

मुदत से कर रहे हैं फरियाद हिन्द वाले ॥

बक़ बुरे दिनों का अब बीत जा चुका है ।

होंगे न आहे जरसे बरबाद हिन्द वाले ॥

मालूम होरहा है आसार नेक दिनों का ।

खुद शर्ह होरहे हैं नाशाद हिन्द वाले ॥

सब इस्तलाम अपना हम-आप देखलेंगे ।

इस तौर कर रहे हैं इरशाद हिन्द वाले ॥

बह होंगे होमकलर अब होमकल होगा ।

होंगे तये सिर से आजाद हिन्द वाले ॥

इति

